शादी के वसन

?माफ प्रमाणीकरण ११८९-११

लेखिका :

डाक्टर राजेश्वरी शर्मा.

M. D. (C. I. C.)

Registered by Government

प्रकाशक : —

शर्मा बुक डिपो—मन्दिर श्री श्यामसुन्दर

गऊघाट मथुरा।

प्रथमबार १००० | सन् १९३७ | मू० ॥)

निवेदन ।

परम पिता परमात्मा को अपार धन्यवाद है कि जिसकी असीम कृपा से ये "शादी के वसन" नाम की पुस्तक आज पूरी होकर अपनी काश्मीरी माताओं तथा बहिनों की सेवा में जारही है। इसमें "शादी के वसन" ऐसे सहल तरीक़े से लिखे गये हैं कि जिसे देखकर हमारी काश्मीरी बहिनें अपने घरों में शादी के मौक़े पर वसन जोड़ सकें। इसमें मेरी पूज्यनीया दादी अर्थात धर्मपत्नि रायबहादुर पं० विशम्भरनाथजी ठुलल के बनाए हुए वसन के अलावा उनका अपना "आत्मानुभव ज्ञान" भी काश्मीरी भाषा में दिया गया है। मेरी पूज्यनीया माता श्रीमती कमलापती जी अर्थात् धर्मपत्नि पं० शम्भूनाथ जी ठुलल के वसन भी हैं। वास्तव में ये पुस्तक सास बहू दोनों के वसनों को संग्रह करके बनाई गई हैं, अतः इसका गौरव और धन्यवाद इनी दोनों को प्राप्त होकर इनका सुन्दर नाम और उज्ज्वल यश इस असार संसार में अजर अमर रहे यही ईश्वर से प्रार्थना है। मेरी मां तथा दादी शादी के वसन जोड़ने में बहुत निपुण थीं अक्सर काश्मीरी बिरादरी में शादियों के मौक़े पर ये बहुत जगह वसनों को बना बनाकर भेजा करती थीं, जिनमें से कुछ वसनों का संग्रह यहां पर किया गया है। जो बहिनें हमारी इस किताब को देखकर भी वसन न बनासकें उन्हें चाहिये कि "आत्मानुभव" या सच्चिदानन्द की स्तुति ही शादी के मौक़े पर गा लिया करें। क्योंकि ईश्वर का नाम और गुणगान-सदा शुभ सूचक तथा कल्याण का करने वाला है।

निवेदिका :—

(डाक्टर) श्रीमती राजेश्वरी शर्मा

M. D. (C. H. M. C.)

धर्मपत्नि पं० चन्द्रमोहननाथजी साहब

डिप्टीकलक्टर (यू.पी.)

मुद्रक :—
'दाऊदयाल गुप्ता'
पुष्पराज प्रिंटिंग वर्क्स, कटरा कसेरट, मथुरा।

❀ ॐ श्री गुरवे नमः ❀

त्वदीयं वस्तु गोविंदं, तुभ्यमेव समर्पये ।



ब्रह्ममूर्ति ब्रह्मनिष्ठ सिद्ध योगेश्वर प्रभो

श्री श्री १०८ श्रीनित्यानन्दजी महाराज सरस्वती

'चरणरज'

आपकी शरणागत बालिका—

(लेडी डॉक्टर) राजेश्वरी शर्मा M. D. (C. H. M. C.)

[illegible]

[illegible] गड़ी



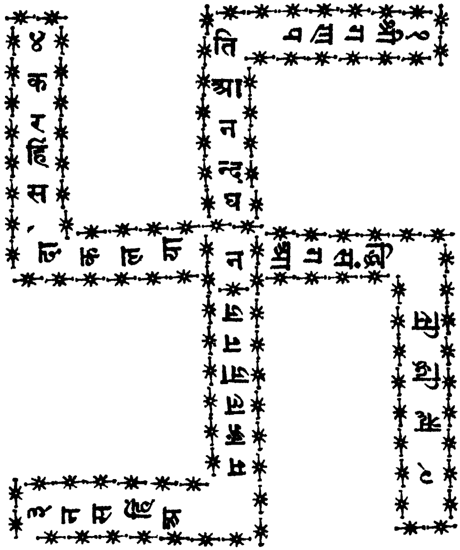
शादी के वसन

[१] शादी के निमन्त्रण पत्र पर [दोहे या चौपाई] ।

(१) विघ्न हरण मङ्गल करन, गौरी पुत्र गनेश ।
लज्जा जन की राखियो, करियो काज हमेश ॥

(२) सिद्धि सदन सुन्दर वदन, नंद नंदन मुद मूल ।
रसिक सिरोमण सांवरे, सदा रहो अनुकूल ॥

(३)



(४) शुभ बिवाह मंह बन्धुवर, कृपा करिय सकुटुम्ब ।
जानि आपनौ काज यह, करिये न तनिक विलम्ब ॥

(५) अज होरी आनन्द उत, इत जोरी को साज ।
हरषि निरखिये रसिक जन, एक पन्थ दो काज ॥

(६) गणपति रज शीशधर, पुनि शिव उर धर ध्यान् ।
चिरंजीव जोड़ी जुगल, यह बर दो भगवान् ॥

(७) आते हैं जिस भाव से भक्तों में भगवान ।
उसी प्रेम से आनकर, दर्शन दें श्रीमान् ॥

पत्र निमंत्रण लीजिये. शादी का सरकार ।
मान हमारा आप के, आवन पर आधार ।।

(८) यद्यपि होगा कष्ट आपको, मम कुटिया पर आने में ।
किन्तु बनेंगे बड़भागी हम, दर्श आपका पाने में ।।
पढ़कर निमंत्रण पत्र को, बैठे न घर रहजाइये ।
हमको हितु अपना समझ, आकर दर्श दिखलाइये ।।

(९) सेवक सदन स्वामी अगमनू ।
मंगल मूल अमंगल दमनू ।।

(१०) है कहां सामर्थ्य हम में, आपके सन्मान की ।
किन्तु सेवक के हुए, मेहमान श्रीभगवान् भी ।।
यह परिश्रम तो उठाना, ही पड़ेगा आपको ।
मान मित्रों का बढ़ाना, ही पड़ेगा आपको ।।

(११) आइये सकुटुम्ब श्रीमन्य, धन्य २ शुभागतम् ।
कीजिये मम गेह पावन, स्वागतम् शुभ स्वागतम् ।।

(१२) आपके शुभ दर्शनों का, लाभ पाने के लिये ।
हैं खड़े हम राह में पलकें (आंखें) बिछाने के लिये ।।

---

(२) बसन जोड़ने के लिये ज़रूरी ज़रूरी बातें।

(१) शुरू में गणेश, शिव, विष्णु, ब्रह्मा, आदि देवी देवताओं के नाम और उनकी बन्दना।

(२) सद्गुरु या कुलगुरु का नाम डाले।

(३) दादी का, दादा का, मां का, बाप का, चाचा का, चाची का, भाई का नाम डाले।

(४) मन्ज़ुमयारी यानि जिसके माफ़ॅत शादी बंधी हो उसका नाम डाले।

(५) खातिर करने वालों के नाम डाले बरात जिस शहर से जिस शहर में आई हो ये सब लिखें।

(६) लड़की या लड़के का नाम यानि दुल्हन और दूल्हे का नाम डाले।

(७) समधियों का नाम ज़ात ओहदा और बरात सजाकर लाने का बयान बड़ी २ तारीफ़ों के साथ लिखे।

(८) वर (दूल्हा) बधू (दुलहिन) की अग्नि-प्रदक्षणा के ७ फेरों पर अनेक देवी देवताओं का नाम लेकर आशीर्वाद देवें।

(९) पोश पूजा के फूलों का ज़िकर कर और आशीर्वाद देना।

(१०) बसन के आख़िर में फिर घर के बड़े का नाम लेवे कि उन्हीं के धर्मसे सब हुआ है।

(११) **नोट**—मरे हुए और जिन्दा अज़ीज़ों के नाम के आगे पण्डितन् कहा जायगा, और वर (दूल्हे) के नाम के आगे (जीवने) कहा जायगा।

नोट-फूल या डबल बीराम के निशान वाले टुकड़े को दुबारा कहे।

(३) लड़की के लिये मैके वालों की दुआ यानि आशीर्वाद
(बिदा के समय)

दुआ ये है प्यारी बेटी सुहागिन हो सुहागिन हो ।
रहे जोड़ी सुखी तेरी पती की प्यारी प्यारी हो ॥
दुल्हिन ये दूल्हे को होवे मुबारिक दूल्हे दुल्हन को ।
बढ़े प्रीती सदा तुममें हमेशा ख़ुश गुज़ारा हो ॥
तू रहे पतिव्रत में पूरी पति से हो सदा प्रीति ।
इसी में ख़ुश है परमेश्वर पति की सेवाकारी हो ॥
बहू ये सास को होवे मुबारिक और सुसरे को ।
सभी परिवार को होवे मुबारिक भाग्यवाली हो ॥
रहो सत धर्म की नीति, रखो परिवार से प्रीति ।
बड़ाई जग में हो तेरी तू अपने कुलका दीपक हो ॥
बड़ोंकी तुम करो सेवा, मिले तुमको सदा मेवा ।
दुआ से उनकी तू फले फले सौभाग्यशाली हो ॥
हुआ ये कार्य सम्पूर्ण, ख़ुशी हैंगे सभी मित्र जन ।
रहे जोड़ी सुखी निशिदिन पिता माताकी ये दुआ है ॥
येही है प्रार्थना मेरी, रखो ईश्वर सुखी जोड़ी ।
तुम्हारी दया दृष्टि का हमेशा इनपे साया हो ॥

(४) लड़के वालों को मुबारिकबादी (बहूलाने पर)

ये बहू होवे मुबारिक तुम्हें परिवार बढ़े ।
इज्ज़त और शान बढ़े और सदा इक़बाल बढ़े ॥
ख़ुश रहे जोड़ी जहां में सदा फूले और फले ।
ख़ाना आनन्द* जी का ईश्वर आबाद रहे ॥

* नोट—जिनकी बहू हैं उनको मर्दों का नाम लेना चाहिये और जहां २ वसनों में फूलों और डबल बीराम के निशान हैं वह टुकड़े दुबारा कहे जांयगे।

(५) स्वर्गीय पण्डित शम्भुनाथजी ठुलल की पुत्री राजेश्वरी की शादी के वसन (जनवरी सन् १९२३)

लेखिका—श्रीमती कमलापती ठुलल ।

वर का नाम—पण्डित चन्द्रमोहन जी शर्मा डिप्टी कलक्टर (० यूपी०)
वधू का नाम—राजेश्वरी ।
वधू की मां का नाम—कमलापती ठुलल ।
वधू के दादा का नाम—पण्डित बिशम्भर नाथ ठुलल ।
वरके पिता का नाम—पण्डित जियालालजी शर्मा ।

हीजः श्री नित्यानन्द गुरुजी बड़े उपकारी ।
तसुन दुई दया सारीयैः ॥ * श्री स्वामी जी दया सारीयै ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश गनेशस ।
त्रकुटी दिव करु गुरु रोम वास ॥ * माजे त्र० ॥
शीश नोऊ गुरु चरण लजिए पारी ।
त्रकुटी करु नमस कारीयै ॥ * गुरु त्रकोटि० ॥
प्रम रुप कमल नैन आय हितकारी ।
कर नम सर्व कार कारींयै ॥ * माजे० ॥
पूरण गुरु मिली कमल गई शरणे ।
बारम्बार नमस्कार करियै ॥ ❀ गुरु० ॥
माजे शारकाय नामस लजिए पारी ।
करिए सदा रक्ष पालीयै ॥ कूरी की० ॥
उदय पुरी उछि चन्द्र मोहन कूरयै ।
मेलयै जयमाल चन्द्र मोहन नाथ ॥ ❀ गले० या० रज्जो० ॥
उछत्तो बादौ खुश गै सारी ।
आकाशे दिवता पोष वथरान० * सारे० ॥
आकाशे दितुने पिता स्वर्ग सेती ।
करनम न मिली यमे कारीये ॥ ❀ वोंय उछि न मिली यमेकारीयै
पितृन आज्ञा दितुयै स्वप्नस ।
दैवी कथ स्वप्नई शोभे फल ॥ ❀ पाने० ॥
ब्राह्मण वोनुहे करो यम कारी ।
दान हेने शर्द चन्द्र भारी आय ॥ ❀रज्जो दान हेने चन्द्र उदय॥

* जहां २ फूल और डबल बीराम के निशान हैं वह दुवारा कहे जांयगे ।

राजपूताने के राजे भारी।
कानपुर शहरस ब्याह ने आये ॥ ❀ बरात चाने सेति आए ॥
जियालाल पंडितने लाल छुम भारी।
विशम्भरनाथ ने कूरीयै ॥ ❀ राजन० ।
त्रभुवननाथ पण्डितन करि यमे कारी।
विश्वनाथ जीवने द्वारे पेठ ॥
शुम्भूनाथने कूरी फुलवारी।
दुई कुल करी उजियारी ये ॥ ❀रज्जो दोई कुलकरी उजियारीयै ॥
डकस चानिस जै जै कारी।
दान हेने चन्द्र उदय सारी आए ॥
❀ रज्जो दान हेने चन्द्र मोहन जीवने आए० ॥
शामनाथ-पंडितने करी त्यारी।
ग़रीब हेंदी कोमारीयै ॥ ❀ राज० ॥
संज़वरु चोन आय बड़सामानस।
सारी मीनाकारी यै ॥ ❀ फुल बूटे मीना कारीयें ॥
द्वार पूज करानछि पूर्ण चंद्र भारी।
सेतछी रोहनी नारीयै ॥ ❀ सेतछि रज्जो प्यारीयै ॥
चंद्र मुखी भरता शाम रङ्ग नारी।
शामता हृदय बिच धारीये ॥ ❀ राज शान्ता चन्द्र हृदय प्यारी ॥
पार्वती परिम शोर लगनस बीठुई।
गनेश राजने ज़ंगे आये ॥ पनि० ॥

पाणी गृहण करानछि राज कोमारी।
हथ चांए रटि चन्द्रमोहननाथ ॥ ❀ राजे०
वेदकु वोनुहे ब्राह्मण सारी।
दान देने चन्द्र मोहन जीवने आए ॥ ❀राज्जो दान हेने चन्द्र उदय
हुमछि करान लक्ष्मी नारायनस ।
नारी सेत दिवता सारी आए (या साक्षी आए)
सर्व सामान छि मेव भरित थाली।
चन्द्र राज करि स्वाहा करीये ॥
हथ चांय रटि करी सप्त–प्रदक्षण।
हिहुर थोउ मोहरन खोरन तल ॥ ❀ राज०
मिलनम हिहुर चोन बड़ सरदारी।
शराफ़त उछि ख़ुश सारीयै ॥
वोहे तोहे निरने मित्तरे कारी।
दान हेने पूर्ण चन्द्र भारी आए ॥ ❀ राजे दान हैने चन्द्र उदय०
दैभत लोदुए रुपे संदी थालस।
खेवान चन्द्र सेत राजन ॥ ❀ वारेरे खेवान चन्द्र सेहेत राजन०
वरथा सेती राज कर इतियै।
लशने वरथा राजेश्वरीयै ॥
दूध जल वोहे तोहे मितरे कारी।
ब्राह्मण दुतिने आशिर्वाद ॥ सारी दुतिने आशेने
कलान् तो सत्तांए राज कर इतियै।

सारी वारे रोज़ेने । ❀ राजनन सारी वारे रोज़ेने ॥
नम्रोह से रोजने सहाय कारी ।
दान हेने चन्द्र मोहन औतारी आये । ❀ राज दान हेने चन्द्र उदय
परिमशोर वरख़स तो माजे पारवतियै ॥
चन्द्र राज करानछि पोषो पूज्र ।
आकाशो दिवता पोष वथरान छी ॥
गुलाब पोश मोती बेला सारीये ।
त्रकोटि दिवता आए सेत नारी ॥
करनम् जै जै कारीये । ❀ कूरी की करनम जै०
ठुलल हेंदी गृह छुई, मह मह कारी ॥
दान हेने चन्द्र मोहन जीवने आये । ❀ राज दान हेने चन्द्र उदय
वेदछी वोनुहे दिवता सारी ॥
काशी के पंडतन करु श्रुति गान ।
तव सेत थाल हेद अग्नि देव आए ॥
शुभे फल कोछे दितु कूरीयै ॥ ❀ राजे शोभफल कोछे दितु सारीयै
स्वर्ग वासी दिवता ब्राह्मण सारी ॥
पोशे हेत दितुयै आर्शीवाद । ❀ राजे०
युत्तांए गङ्ग जमुना सरस्वति यै ॥
लशने वरथा राजेश्वरीयै । वारे
सूर्य तो चन्द्र यम प्रज्ज़लान सारी ।
डेक सर्दारी नेरेने ॥ ❀ राजन डेक० ॥

लशनम् तो करनम् बड़ शुभकारी ।
दान हेने चन्द्र उदय भारी आये ॥ ❋ राज दान हेने चन्द्र०
माजे गुरु दितु आही राजेकोमारी ।
वसन्ताए नई सव जारीयै ॥ * ऋतु बसन्त० ॥
चाने जीवन बृक्ष सुख कारी ।
लंजे लंजे लजे गुलजारीयै ॥ * राज लंजै लजै फल सारी ।
जिमि सालिगरामई तुलसी प्यारी ।
पति सुपननुई नारीयै । * राजन पति सुपन नुई प्यारीये ।
राधा से प्रीति करी कृष्ण मुरारी ।
राजन करी पती सेत भारीयै ॥ * राजन ॥
सतभामा बस कस मुर्ली धारी ।
सुछेक करनम सारीये । * रज्जो पति सेत कर०
सर्व सुख दायक पति आज्ञाकारी ।
धर्मछि पननुइ धारीयै ॥* राजन० ॥
आशिर्वाद कोछे करी राजेश्वरीयै ।
हथ जुरी करि नमस्कारीयै ॥ *राजन गुरु छि करीनम०
श्री गुरु करनम मुशकिल आसानी ।
तसुन दुई चरननछि नमस्कार ॥
गुरू दया करनम यसे कार कारी ।
श्री गुरू चरनछि नमस्कार ॥ तसी पाने भगवान गसे शरन से
विशम्भर नाथ पंडित ने धरमछि सारी ।

श्री शंकरा नन्द स्वामी ए दुवा सैत ॥ श्री परमहंस मोहनी बाबा
निरविघन करनम यसे कार कारी।
श्री संत जन चरनछि नमस्कार ॥
शम्भूनाथने स्वर्ग वरवथी गए।
गसहा न कर हा ख़ुश हाली ॥ वोय०
उछि न मिलनुई कमी यमी सारी।
चोन माज करमछि सारियै ॥ चोन माज पापछि भारीयै
व्यक्त, ब्रह्माण्डछि नापायदारी*।
सार छु न रोज़ान यमे संसार ॥ वाए०
कूरन नाम वोए सूर्य सम प्रज़लान।
लशने परिवार सारीयै ॥* चोन ॥
बवजु तो पति गृह करु गुलज़ारी।
लशने सूर्य चन्द्र जूरीये ॥
लशने दुलारी बेईयां करी मनज़िमयारी।
दान हेने शरद चन्द्र भारी आए ॥
राजन दान हेने चन्द्र मोहन नाथ जीवने आए।

(६) पण्डित ज्ञाननाथ जी मदनकी सुपुत्री उमाश्वरी की शादी के वसन (जनवरी सन् १९२३)

बधू के गुरू का नाम-स्वामी संतदेव जी ।
बधू की दादी का नाम-मानरानीजी ।
बधू के दादा का नाम-माननाथजी ।
बधूके चाचा का नाम-सोमनाथजी ।
बधू की मां का नाम-शामवंती ।
बधू का नाम-उमाश्वरी ।
वर का नाम—श्यामसुन्दर नाथ ।

हीजेः प्रथम गनेशसतो गजमुखधारी ।
विघ्न निवारों से नमस्कार ॥
शिव शंकर हर त्रयजटायधारी ।
विश्व कर्तारों से नमस्कार* ॥
हटि हल्लाहल तो शेश मुकुटछी ।
त्रभुवन स्वामी शिवशंकर ॥
माजे राज्ञाए चरनस लजियपारी ।
तसुन दया सारीयै ॥
रिशी मन्साराम शरने दुआ वोए सारी ।
धूनि साहब चरनछि नमस्कार ॥ * ऋषि धूनी० ॥
मानरांए माज सेवा करनम भारी । *

तवे स्वयमनाथ ज्ञानसेति आए ॥
माननाथ पंडितन बाग़ लजि सारी ।
नइ नइ नित सब ज़ारीयै ।
स्वर्ग सुख समां मदन के घर छुई ॥
स्वयं ब्रह्मज्ञान ज्योति प्रकाश ।
सर्व सुखदायक गुरु चरन सेवा ।
श्रीगुरु चरनछि नमस्कार ॥ *
शांवत माज पूजे दिवता सारी ।
तवे उमाश्वरी औतारीयै ॥
दूध पूत अन धन सर्व सुख सेतीछी
सर्व सुख खनिके चरन् से आए ॥
ज्ञाननाथ पंडितन गृहे गुलज़ारी ।
नितनई लंजे लंजे सब ज़ारी ॥
ज़ातुक चोन लिख कृष्ण भगवानस ।
गुण किमि वखनकुं जगदम्बे ॥
धर्म धुरन्धर पतिव्रत नारी ।
नाम चोन थोवुने उमाप्यारी ॥
माजे हेंदी कुन्ज बरदारी ।
सर्वछि उमा प्यारीयै ॥
स्वामी सन्तदेव महराज आए हितकारी ।
शांवत माज उमा गई शरने ॥

महराज चरनुक प्रताप भारी।
हथजुरी कोरु नमस्कारोयै॥
परिमशोर पति मिलु तपकोर भारी।
आज्ञा शिरधरी करि नमस्कार॥
पतिहित तपस्या उमा करि भारी।
तवे मिलनई श्याम सुन्दरनाथ॥
श्री सन्तदेव स्वामी छि आज्ञा सेती।
करनम यमे कार कारीयै॥
बैजनाथ पण्डितने राज छत्र धारी।
वरने आए कौमारीये॥ सोमनाथ पण्डितन द्वारे पैठ॥
हरीहर नाथ राजन लाल छुम भारी।
ज्ञान नाथ पण्डितन को मारी॥
कटक शहर के महराजा भारी।
सेत छी सब सदारीयै॥
संज्ञवरु चोन आय बड़ सामानस।
सोन पेठ फुल बूटे मीनाकार॥
बारात चाने गोरो का बाजा।
हस्ती घुड़ ऐयर प्लेन मोटरकार॥
हस्ती पेठ महाराज्ञ सोने अम्बारी।
कुन्दन मीना कारीयै॥
खलतस चाने फुल बूटे कारी।

करयै झल २ कारीयै ॥ हीरे भरये झल० ॥
पटकस महराज मुक्त झालारी ।
ज़ेगे पे जड़यै मड़ियां लाल ।
हुम पर सेतछि मुकुट अलङ्कारी ।
दान हेने शाम सुन्दर औतारी ॥ उमा दान० ॥
द्वार पूज़ा करान छि शांमसुन्दर औतारी ।
सेत छी उमा नारीयै ॥ सेत छी उमा० ॥
सूर्य सम भरता चन्द्रमुखी नारी ।
उछित्तौ ख़ुशगै सारीयै ॥ सूर्य चन्द्रसम ज़ूरीयै० ॥
पार्वती परिमशोर लगनस ब्यूठुई ।
गनेश राज़न ज़गे आए ॥
श्याम सुन्दर नाथने हथ चाऐं रटिये ।
आकाशे दिवता साक्षी आए ॥
पाणी गृहण करानछि उमेश्वरीयै ।
दान हेने श्याम सुन्दर जीवन आए । उमा दान हेने० ॥
सर्व सामानछि सेतमेव भरी थाली ।
हुमछि करी नर नारीयै ॥
हथ चाऐं रटि करि सप्त प्रदक्षण ।
हिहुर धरि मोहरन खोरन तल ॥
कुवेर सम हिहुर चोनमहराज भारी ।
उच्छितो वादौ ख़ुशहाली ॥

दैभत लोदुयौ रुपै संदी थालस ।
शामसुन्दर तो उमा खेवानछी । पति सेत उमा खेवानछी
वोहे तोहे निरनै मित्रैकारी ।
ब्राह्मण दितुनै आशेने ❀ सारे ब्राह्मण० ॥
नौगृह रोजने साहाकारी ।
दान हेने राज तेज धारीयै ॥ उमादानहेने शाम सुन्दर जीवने०
बरथा सेती राज्ञ कर इतिये ।
लशने बरथा उमाश्वरियै ॥ ❀
कलान तो सत्ताए राज्ञ कर भारी ।
सारी वारे रोज्ञने ॥
परिमशोर वरखस तो माजे पारवतियै ।
उमाप्यारी करानछी पोशे पूज्ञ ॥ ❀
आकाश देवता पोश वथरानछी ।
गुलाबपोश मोती बेला सारीयै ॥
त्रिकोटी देवता आए सेत नारी ।
करनम जय जय कारीयै ॥
गृहे सोमनाथ मैह २ कारी ।
दानहेन राजतेज धारीयै ॥ उमादान हेने शामसुन्दर राजन आए
वेदछि वोनुहे ब्राह्मण सारी ।
काशी के पण्डित कोरु श्रुति ज्ञान ॥
थाल हेत अग्निदेव शोभा फल दितुनै ।

आकाशे देवता पोथे वथरानछी ॥ ❀
स्वर्ग के दिवता ब्राह्मण सारी ।
दितुने पोशेहत आशीर्वाद ॥ ❀
सर्व सुखदायक पति आज्ञाकारी ।
धर्मछि पननुई धारीयै ॥ ❀
राधाछे प्रीति करु कृष्ण मुरारी ।
राजकर पति सेत भारीयै ॥
युत्तांए गंग जमना सरस्वतीयै ।
लशने बरथा उमेश्वरीयै ॥
सूर्य तो चन्द्रयम प्रजलान सारी ।
डेक सरदारी नेरने ॥ सारी वारे रोजेने ॥
लशनम तो करनम बड शुभकारी ।
दान हेने राज तेज धारीयै ॥ राजा शामसुन्दर जीवने आए ॥
माननाथ पंडितने धरमछि सारी ।
करये निर्विघ्न कारीयै ॥
संतान नाम वोई सूर्य सम प्रजलान ।
लशने परिवार सारीयै ॥
कुंदन पेठे गए जिलाकारी ।
दान हेने राज छत्र धारीयै ॥उमादां हेनेशांसुंदर जीवन आए॥

(७) पंडित विश्वनाथ जी ठुलल की सुपुत्री प्रानेश्वरी की शादी के वसन (जनवरी सन् १६२३)

बधू का नाम--प्रानेश्वरी।

प्रानेश्वरी की दादी का नाम--नंदो और स्वरूपरानी।

सद्‌गुरू का नाम--स्वामी शंकरानन्द जी।

लड़की की मां का नाम--बिशनरानी।

दादा का नाम--विशम्भरनाथ।

लड़की के ससुर का नाम--नारायन।

लड़की की ददिया सास का नाम-लाड़ो।

दूल्हे का नाम--शामसुंदर नाथभान।

श्री हींजें प्रथम गणेनश तो गजमुखधारी।
विघ्न-निवारों से नमस्कार॥ ❀
शिवशंकर हर त्रजटाय धारी।
त्रिश्व कर्तारों से नमस्कार॥ ❀
हटि हल्लाहल तो शेश मुकुटछी।
त्रभुवन स्वामी शिवशंकर॥
माजे शारकाए चरनस लजिये पारी।
करिये सदा रक्षपालीए॥
नंदोमाज करी देवपूजा भारी।
प्रानेश्वरी औतारीयै॥ तव प्रानेश्वरी० ॥

स्वामी शंकरानंद दुवा सेती ।
बिशनराए माजी मिली कूरीयै ॥
मांजे हेंदी कुंजबरदारी ।
सर्वंछि प्रान प्यारीयै ॥
प्रानेश्वरी करु तपस्या भारी ।
दान हेने श्यामसुंदर औतारी आए॥ प्रान दान० ॥
सरुपनारायन पण्डितन संतान सारी ।
विशम्भरनाथने कूसीयै ॥
रामनाथ जीवने लालछुम भारी ।
विश्वनाथने कूरीयै ॥
आगरे शहर के सर्दार सारी ।
कानपुर शहरस ब्याहन आए ॥ विश्वनाथजीवने द्वारे आये
लाडो बेहूऐं हेंदी अरमान भारी ।
ग़रीब बबजू कौमारीयै ॥ ग़रीब हेंदी कोमारीयै० ॥
सिज्ञवरु चोन आए बड सामानस ।
फुल बूटा मीना कारीयै ॥ सारी कुंदन कारीयै० ॥
बरात चोंए आए बड़ बाज़ारस ।
सेतछी सरदार सारीयै ॥
द्वार पूज़ करानछि लक्ष्मीनारायनस ।
शामसुंदर सेत प्राणप्यारीयै ॥
चंद्रमुखी भरता श्याम रंगनारी ।

श्यामता श्यामसुंदर प्यारीये ॥ पन्नो० ॥
पार्वती परिमशोर लगनस बीठुई ।
गनेशराजने जगे आए ॥
पाणिग्रहण करानछि प्रान को मारी ।
हथ चांए रटि श्यामसुंदरनाथ ।
वेदकु वखनुक ब्राह्मण सारी ।
दान हेने श्यामसुंदर औतारी आए ॥ प्रानो० ॥
हुमछि करान प्रान श्यामसुंदर ।
नारी सेत दिवता साक्षी आए ॥
सर्व समानछि मेव भरि थाली ।
स्वाहा करि नर नारीयै ॥ स्वाहा करी शां प्रानप्यारीयै ॥
हथ चांए रटि करी सप्त प्रदक्षण ।
हिहुर थोउ मोहरन खोरनतल ॥ प्रानो० ॥
मिलनम हिहुर चाने बड़ सरदारी ।
करयै अरमान भारीयै ॥ शराफ़त उछि खुशी सारीयै ॥
वोहे तोहे निरने मितरेकरी ।
दान हेने शामसुन्दर औनारी आए ॥ प्रान० ॥
दैभत्त लोदुयी रुपे सन्दी थालस ।
प्रान सेत शाम खेवानछी ॥ शाम हेत प्रान खेवानछी ॥
बरथा सेती राज कर इतियै ।
लशने वरथा प्रानेश्वरीयै ॥ वारे लशने० ॥

कलान तो सत्तांए राज्ञ कर भारी ।
ब्राह्मण दितुनै आशेने ।। सारी दितुने० ।।
नौगृहे से रोज्ञने सहाय कारी ।
दान हेने श्यामसुन्दर औतारीयै ।। प्रानो० ।।
परिमशोर वरख़स तो माजे पारवतिये ।
प्राणसेत शाम करी पोश पूज्ञ ॥ वारे प्रान० ॥
आकाशे दिवता पोशे वथरानछी ।
गुलाबपोश जूही बेला सारीयै ॥
त्रकोटी देवता आए सेत नारी ।
करनम जै जै कारीयै ।। कूरी की करनम० ।।
ठुलल हेंदी गृह छुई महमहकारी ।
दान हेने शामसुन्दर औतारी आए ।। प्रान० ।।
वेदछि योनुहे देवता सारी ।
काशी के पण्डित कोरु श्रुति गान ।।
तव सेत थाल हेत अग्नि देव आए ।
शुभे फल कोछे दितु कूरीयै ।। सारे० ।।
स्वर्गवासी दिवता ब्राह्मण सारी ।
पोशे हेत दितुने आशीर्वाद ॥ प्रानछि हथ फुल० ॥
युत्तांये गंग जमना सरस्वतीयै ।
लशाने वरथा प्रानेश्वरीयै ।। वारे० ।।
सूर्य तो चंद्रयम प्रज़लान सारी ।

डेक सरदारी नेरने ॥ सारी वारे रोज़ने ॥

लशानम तो करनम बड़ शुभकारी ।

दान हेने शाम सुंदर० ॥

बबतो माज आही दितुने सारी !

वसंत आए नई सब जारीयै ॥

चाने जीवन वृक्ष सुखकारी ।

लंजे लंजे लजी गुलज़ारियै ॥ लंजे २ फल सारीयै ॥

जिमि सालीग्रामइ तुलसी प्यारी ।

सुछेक श्यामसुंदर प्यारीयै ॥ नारीयै ॥

राधा से प्रीति करी कृष्णमुरारी ।

राज कर पति सेत भारीयै० ॥ प्रानो० ॥

सर्वसुखदायक पति आज्ञाकारी ।

धरमछि पननुई धारीयै ॥ प्रान० ॥

हशों की करयै सेवा भारी ।

दान हेने शामसुंदर जीवन आए ॥ प्रान० ॥

विश्वनाथ जीवने कुरी·फुलवारी ।

प्रजलान नामवोय भारीयै ॥ प्रान प्रजलान० ॥

बबजु हिहुर गृह करु गुलज़ारी ।

लशने परिवार सारीयै ॥ वारे० ॥

विशम्भरनाथ ने धर्मछिसारी।
करनम निर्विघ्न कारीयै। यमे करनम०

नोट—बाक़ी नाम शुरू में "राजेश्वरी की शादी के वसन की जगह देखे।
जिंदों के नाम के आगे "जीवन" कहे।
स्वर्गवासी पित्रों के नाम के आगे "पण्डितन" कहे॥

---

(८) पण्डित ओंकारनाथजी रैना की सुपुत्री सुशीला की शादी के वसन।

लेखिका—श्रीमती कमलापती ठुलल।

वधू के दादा के गुरू का नाम—ब्रह्मनाथ जी।
वधू के दादा का नाम—विशम्भरनाथजी।
वधू की दादी का नाम—आनंदी और जसवन्ती रानी।
वधू की मां का नाम—बिशनपती।
वर का नाम—त्रभुवन प्रकाश तैमनी।
वधू के चाचा का नाम—मनोहरनाथ ।
वधू के ससुर का नाम—श्रीरामजी तैमनी।
वधू के ममियाससुरों का नाम—दयाकृष्णजी, हरिकृष्णजी वालकृष्णजी।
वधू की ददिया सास का नाम—सैनापतीजी।
वधू की सास का नाम—काशोजी।

हींजै प्रथम गनेशस्तो गजमुखधारी ।
विघ्न निवारों से नमस्कार ॥ सारे
शिव शंकर हर त्रजटायधारी ।
विश्व कर्तारों से नमस्कार ॥ सारे०
हटि हलाहल तो शेश मुकुटछि ।
त्रभुवन स्वामी शिवशंकर ॥ हरी०
विशम्भरनाथ पण्डितने तपस्या भारी ।
फुलनम तव फुलवारीयै ॥ सारी
श्री गुरा कृपा करनम सारी ।
ओंकारनाथ सबजारीयै ॥ चमन
आनन्दी बेइये हेत ब्रमरूपधारी ।
श्री ब्रमनाथ अवतारीयै ॥ गुरु०
ब्रमनाथ महाराज शरन गए सारी ।
हतजु.री करी नमस्कारीयै ॥ गुरु०
श्रीगुरु चरन्नछि लजिये पारी ।
तसुन दुई दया सारीयै ॥ सारी तसुन दुई दया भारीयै ।
त्रकुटी दिव करु गुर रोम बासछी ॥
त्रकुटी करु नमस्कारीयै । सर्व सन्त जन नमस्कारीयै ॥
त्रिशनपती बेइए करी सेवा भारी ।
ओंकारनाथ गुलजारीयं ॥ गृहे०

माजे राज्ञाये नामस लजिए पारी ।
करनम सदा रच्च पालीयै ।। शीलादितुनम कुरी सुखकारी ।
सुशीलकुमारी करू' सोयम्बर छुई ।
राज्ञे महाराज्ञे आए सारीयै ।। यते०
त्रभुवन अन्दरक प्रकाशकारी ।
त्रभुवन प्रकाश अवतारी आये ।। वारे०
शोभा उछित्तो शीला प्यारी ।
मेलये जयमाल त्रभुवन प्रकाश।।गले या शीला मेलए जयमाल०
सर्वछि बादो करि .खुशहाली ।
करनम जय जय कारीयं ॥ सारे ॥
लखनऊ शहर के रईस भारी ।
देहली शहरस ब्याहने आये ।। यते०
कश्मीर नगर के सर्दार सारी ।
बरात चाने सेती आये ।। यते०
गंगा परशाद पंडितने लाल छुमभारी ।
विशम्भरनाथने कूरीयै ।। शीला०
हरीकृष्ण जीवने करुयमे कारी ।
मनोहरनाथ ने .खुशहाली ॥ वारे०
श्रीराम जीवने करु त्यारी ।
ओंकारनाथने द्वारे आये ॥ वारे०

दयाकृष्ण जीवने शोभाकारी ।
द्वारकानाथ करी खातिरदारीयै ॥ सारी०
वालकृष्ण जीवने आए जिलाकारी ।
गरीव बबजू कोमारीयै ॥ शीला०
ओंकारनाथने गृहे गुलजारी ।
लंजे लंजे नित सब जारीयै ॥ वारे०
सजंवरु चोन आए वड़ सामानस ।
सारी मीना कारीयै । फुल बूटे मीनाकारीयै ॥
बरात चाने गोरों का बाजा ।
हस्ती घुड़ ऐयर प्लेन मोटरकार ॥ सारे०
हस्ती घोड़े लोदुयो सोन मुक्त सारी ।
पृथ्वी से आकाश रौशन गैस ॥ सारे०
हस्ती पेठ महाराज सोने अम्बारी ।
कुन्दन मीना कारीयै ॥ सारी०
खलतस महाराजे फुल बूटे कारी ।
करयै झलझल कारीयै ॥ हीरे
पटकस महाराजे मुक्त झालारी ।
जगे पे जड़िये मणिये लाल ॥
सारे जगे पे जड़िये हीरे लाल ।
हुम पर सेतछि मुकट अलंकारी ।
दान देने त्रभुवन प्रकाशक आये ॥ शीला दां हेने०

त्रभुवन प्रकाश करी द्वारे पूजा ।
सेतछि शीला नारीयै ॥ वारे सेतछि शीला प्यारीयै० ॥
सूर्य सम भर्ता चन्द्रमुखी नारी ।
उछित्तौ .खुशगै सारीयै ॥ वारे सूर्य चन्द्रमा की .जूरियै ॥
पार्वती परमशोर लगनस व्यूठुई ।
गनेश राजने जगे आये ॥ पाने०
त्रभुवन प्रकाश हथ चांये रटिये ।
आकाशे दिवता साक्षी आये ॥ यते नारी सेत देवता सारी ॥
पाणीग्रहन करानछि शीला प्यारी ॥
दानहेने त्रभुवं औतारी आये।शीला दानहेने बांकेबिहारी आये।
सर्व समानछि मेव भरित थालो ।
हुमछि करी नर नारीयै ॥ वारे हुम०
हाथ चांय रटि करी सप्त प्रदक्षण ।
हिहुर थोउ मोहरन खोरन तल ॥ सारे
हिहुर चोन मिल नुई बड सर्दारी ।
करयै अगमान भारीयै ॥
शराफ़त उछि .खुश सारीयै ।
वोहे तोहे निरनै मितरेकारी ॥
दान हेने त्रभुवन प्रकाश आये। शीला दानहेने मुलींधारी आये॥
दै भत लोटुयो रुपै संदी थालस ।
खेवान त्रिभुवन सेत शीला ॥ वारे खेवां त्रभुवं हेत शीला ।
त्ररथा सेती राज कर इतिये ॥

लशने बरथा शीलावतियै ॥ वारे०
दूध जल वोहे तोहे मितरेकारी ।
ब्राह्मण दितुने आशीने । सारी ब्रहमण दितुने आशीर्वाद ॥
कलांत्तो संत्तायै राज़ कर इतिये ।
सारी वारे रोज़ने ॥
नौग्रहं से रोज़ेने साहाकारी ।
दां हेने त्रभुवन औतारी आये।शीला दां हेने राजतेजधारी आये॥
परिमशोर वरख़स तो माजे पार वतिये ।
पति सेत शीला करी पोशे पूज़ ॥ वारे०
अकाशे दिवता पोशे वथरानछी ।
गुलाबपोश मोती बेला सारीये ॥ जूही०
त्रकोटी देवता आग सेत नारी ।
करनम जै जै कारीयै ॥ कूरी की०
रैना गृह छुई महमहकारी ।
दान हेने त्रभुवन प्रकाश आये ॥ शीला दां हेने मुकुट बिहारी०
वेदकु वोनुहे दिवता सारी ।
काशी के पंडितन करु श्रुतिगान ॥ सारे काशीके पंडितन करु०
तव सेत थाल हेत अगिन देव आये ।
शोभफल कोछे दितु कूरीयै।शीला शोभेफल कोछे दितु सारीयै।
स्वर्गवासी दिवता ब्राह्मणसारी ।
पोशे हेत दितुने आशीर्वाद ॥ सारे०
युत्तांय गंगा जमना सरस्वतियै ।

लशने वरथा शीलावतियै ॥ वारे०
सूर्य तो चन्द्रयम प्रज़लान सारी ।
डेक सर्दारी नेरेने ॥ शीला० ॥
लशनम तो करनम वड़ शुभकारी ।
दान हेने त्रभुवनप्रकाश आये ॥ शीला०
माजे गुरु दित आही शील कुमारी ।
बसन्त आय नए सव ज़ारीयै ॥ ऋतु
चाने जीवन वृक्ष सुखकारी ।
लंजे लंजे लंजे फ़ल सारीयै ॥ शीला लंजे लंजे गुलज़ारीयै ।
जिमि सालिग्रामई तुलसी प्यारी ।
पती सुपननुई नारीयै । शीलापती सुपन्नुइ प्यारी ॥
राधा से प्रीत करी कृष्णमुरारी ।
राज़ कर पति सेत भारीयै ॥ शीला०
सतभामा बस करु मुर्लीधारी ।
सूछेक करनम सारीयै ॥ शीला पति सेत करनं सारी ।
सर्व सुखदायक पति आज्ञाकारी ।
धर्मछि पन्नुइ धारीये ॥ शीला०
सैनापती बेइए हेंदी अरमान भारी ।
ग़रीब हेंदी कौमारीयै ॥ शीला ग़रीब माजकी कूरीयै ।
काशो बेईये हेंदी बड़ ख़ुशहाली ॥
करनम पुतरे कारीयै । लशनम तो करनम कारीयै ॥

हशों की करयै सेवाकारी
दानहेने त्रभुवन औतारीयै ।। शीला दांन हेने कृष्णमुरारी० ।।
आशीर्वाद कोछे करी शीलाव्रतिये ।
हथजुरी करि नमस्कारीयै ।। शीला०
गुरु दया करनम यमे कारकारी ।
तसुन दुइ चरननछि नमस्कार ।। असी०
विशम्भरनाथ पंडितने धर्मछिसारी ।
निर्विघ्न करनम कारीयै ।। सारी०
सन्तान नाम वोयं सूर्य सम प्रज़लान ।
लशने परिवार सारीयै ।। वोयं०
सुहागरांय माज़ करी मंजिम यारी ।
दान हेने त्रभुवन प्रकाश आये ।।
शीला दांन हेने गिरवंधारी आये ।
माजे हेंदी शीला कुन्ज वरदारी ।।
कूरीछि परधन सारीयै । शीला कूरीछि माजगइहारी ।।
हिहुर ग्रह करनम सर्व सुखखानी ।
क़दम चोन नेरने मुबारिक ।। शीला०
लशने पती सेत युग २ सारी ।
दान हेने त्रभुवन प्रकाश आए ।। शीला दां हेने०

(६) पंडित जगदीशनारायणजी हाकसर की सुपुत्री सरस्वती की शादी के वसन ।

लेखिका—श्रीमती कमलापती ठुलल ।

नोट-जिंदों के नाम के आगे "जीवन" कहे ।

स्वर्गवासी पित्रों के नाम के आगे "पण्डितन" कहे ॥

बधू की दादी का नाम-उत्तमरानीजी ।

वधू के दादा का नाम-सूरजनारायणजी ।

बधू के परदादा का नाम-स्वरूपनारायणजी ।

वधू के परपरदादा यानि दादाके पिताका नाम-विशननारायणजी

बधू की मां का नाम-जगदीशवन्ती ।

सत्यनारायण-वधू की मां के इष्ट देवता ।

लक्ष्मीनारायण-हाकसर खानदान के कुल के गुरु ।

वर का नाम-कामताप्रसादजी मुशरान एस. डी. ओ.

बधू के दादा के भाईयों का नाम—रामनारायणजी, हृदय-नारायणजी, रूपनारायणजी और शिवनारायणजी हाकसर ।

वधू के चाचा का नाम-राजेन्द्रनारायणजी हाकसर ।

बधू के चचेरे चाचा का नाम-श्यामसुन्दरनारायण हाकसर ।

वर के दादा का नाम-कुंवरप्रसादजी मुशरान ।

वर के पिता का नाम-ज्वालाप्रसादजी मुशरान ।

वर के चाचा का नाम-दुर्गाप्रसादजी मुशरान ।

वर की मां का नाम-विशनपती मुशरान ।

हींजें : प्रथम गणेशस तो गजमुखधारी ।
विघ्न निवारों से नमस्कार ॥ सारे०
शिव शंकर हर त्रजटाधारी ।
विश्व कर्तारों से नमस्कार ॥ हर०
हटि हलाहल तो शेश मुकटछी ।
त्रभुवन स्वामी शिव शंकर ॥ हर०
उत्त राय माज करी सेवा भारी ।
मिलनुह बाल गोपालीयै ॥ वारे०
माजे राज्ञाय चरन्नछि लजियेपारी ।
करनै सदा रक्ष पालीयै ॥ लालन०
विशननारायं पडितं तपस्या भारी ।
लजनं तव फुलवारीयै ॥ सारे फुलनम तव फुलवारीयै ॥
सरुपनारायन पंडितने संतान सारी ।
धर्मछि करनं भारीये ॥ धर्मछि तसुन दुई सारीयै ॥
सूर्य नारायन पडितने बाग बहारी ।
उछि न मिलनुह कारीयै ॥ वोयं उछि०
जगदीशवन्ती माज करी पूजा भारी ।
सत्तनारायन दितु कूरीयै ॥ वारे सत्तनारायं दितु सरस्वतीयै ॥
माजे शारकाय चरनंछि करी नमस्कारी ।
दितुने सरस्वती प्यारीयै ॥ वारे दितुने सरस्वती कूरीयै ॥
जगदीशनारायं जीवने लजी सब जारी ।
लंजे २ लंजे फल सारीयै ॥ वारे लशने बाल गोपालीयै ॥

जातुक चोन लिखु लक्ष्मीनारायनस ।
गुण किमी वखनुक सरस्वतीयै ॥ वारे०
दूध पूत अन्न धन सर्वसुख सेतछि ।
सर्व सुख खानिक सेती आये ॥ वारे०
जगदीशनारायं जीवने ग्रह गुलज़ारी ।
नित नई लजे सब्ज़ारीयै ॥ असी०
धर्म धुरन्धर पतिव्रत नारी ।
नाम चोन थोउने सरस्वतीयै ॥ वारे०
धूनी साहब कृपा कोरेपे करयै ।
सन्तरुप आय हितकारीयै ।। श्रीमहराज आए०
श्रीमहराज चरननछि परनाप भारी ।
हथजुरी करी नमस्कारीयै ।। गुरु०
ब्रह्मा विश्नु महेश गनेशस ।
त्रकोटि दिवकरु सन्त रोमवास ।। सारे०
शीश नोऊं संत चरन लजिये पारी ।
त्रकोटी करी नम्सकारीयै ।। सारे०
ब्रह्म रुप कमल नैन आए हितकारी ।
करनम सर्वकार कारीयै ।। वारे करने निर्विघ्न०
सरस्वती प्यारी सोयम्बर छुई ।
राजे महराजे सारी आये ।। यते०
शोभा उच्छित्तो सरस्वती प्यारी ।
मेलये जयमाल कामतानाथ ।। गले या सरस्वती मेलये०

सर्वछि बांधौ करी खुशहाली।
करनम जै जै कारीयै ॥ वारे पोशे वशु नगै सारीयै ॥
इलाहाबाद शहर के राजे सारी।
देहली शहरस ब्याहने आए ॥ सारे बरात चाने सेती०
कुंवरप्रसाद ने बड़ सर्दारी।
रामनारायनने कोमारी ॥ वारे जैनारायन०
ज्वालाप्रसाद पंडितने लालछुम भारी।
हिरदेनारायं कूरीयै ॥ वारे जगदीश०
दुर्गाप्रसाद जीवने करुयमे कारी।
रूपनारायन द्वारे आये ॥ वारे राजेन्द्र जीवने०
शिवनारायन जीवने करी त्यारी ॥ वारे कारे करीयमे कारी ॥
श्यामसुन्दर जीवने करी खातिरदारी।
दान हेने कामताप्रशादने आए। सरस्वती दान हेने कृष्ण०
सिंजवरुं चोन आए कुन्दनकारी।
फुलबूटे मीना कारीयै ॥ सारे०
बरात चाने गोरों का बाजा।
हस्ती गोड़े ऐयरप्लेन मोटरकार ॥ सुन्दर०
हस्ती घोड़े लोदुयो सोन मुक्त सारी।
पृथ्वी से आकाश रौशन गैस ॥ सारे०
हस्ती पेठ महराज सोन अम्बारी।
कुंदन मीना कारीयै० ॥ सारे०
खलतस महराजे फुलबूटे कारी ॥
करयै झलझल कारीयै ॥ हीरे०

पटकस महाराज़े मुक्त झालारी ।
ज़ेंगे पे जड़ये मणिये लाल ॥ सारे ज़ेंगे पे जड़ये हीरेलाल
हुम पर सेतछि मुकट अलंकारी ।
दान हेने मुकुट बिहारी आये ॥ सरस्वती०
कामताप्रशाद ज़ीवने करी द्वार पूजा ।
सेतछि सरस्वती प्यारीयै ॥ सेतछि राधाप्यारी०
सूर्य सम भर्ता चन्द्रमुखी नारी ।
उछित्तौ ख़ुशगै सारीयै ॥ वारे सूर्य चन्द्रमा की .जूरीयै ॥
पार्वती परिमशोर लगनस बीठुइ ।
गनेश राज़ने ज़ंगे आए० ॥
कामताप्रशाद जीवने हथ चांय रटिये ।
आकाशे दिवता साक्षी आये । सारे नारी सेत दिवता आए ॥
पाणी ग्रहण करानछी सरस्वती प्यारी ।
दान हेने गिरवरधारी आये । सरस्वती दानहेने कामताप्रसाद०
सर्व सामानछि मेवभरी थाली ।
हुमछि करी नर नारीयै ॥ वारे०
हथ चांय रटि करी सप्त प्रदक्षण ।
हिहुर थोउ मोहरन खोरन तल ॥ वारे०
वोहे तोहे नेरैने मितरेकारी ।
दान हेने श्याम बिहारी आये ॥ कूरी दां०
दैभत लोदुयो रुपै संदी थालस ।
खेवान पती सेत नारीयै ॥ वारे खेवान पति हेत सरस्वतीयै

बरथा सेती राज्रकर इतिये ।
सारी वारे रोज्जने ॥ चाने०
नौग्रह से रोज्जने साहायकारी ।
दान हेने राज तेजधारी आये ॥ सरस्वती दान हेने०
परिमशोर वस्त्र स तो माजे पारवतियै ।
पति सेत सरस्त्रती करी पोशे पूज्ज ॥ वारे०
आकाशे दिवता पोशे वरशुनछि ।
गुलावपोश मोती वेला सारीयै ॥ नरगिस०
त्रकोटि दिवता आए सेत नारी ।
करनम जै जै कारीयै ॥ कोरे की०
हाकसर ग्रह छुई मैह २ कारी ।
दान हेने बांके बिहारी आये ॥ सरस्वती०
वेदकु वोनुहे दिवतासारी ।
काशी के पंडितने करु श्रुतिगान ॥ देहली के गोरंकरु०
तव सेत थाल हेत अगिन देव आये ।
शोभफल कोछे दितु कूरीयै ॥ सारे शुभफल कोछे दितु०
स्वर्गवासी देवता ब्राह्मण सारी ।
पोश हेत दितुने आशेनै ॥ सारे०
युत्तांय गंग जमना सरस्वतीयें ।
लशने बरथा सरस्वतीयै ॥ वारे०
सूर्य तो चन्द्रयम प्रज़लानसारी ।
डेक सरदारी नैरने ॥ सरस्वती०

लशनम तो करनम बड़ शुभकारी ।
दान हेने कृष्णमुरारी आये ॥ सरस्वती०
सन्त जन दितु आही सरस्वती प्यारी ।
वसन्त आए नइ सब जारीयै ॥ ऋतु०
चाने जीवने लता सुखकारी ।
लंजे २ लंजे सब जारीयै ॥ सारे लंजे २
जिमी सालिग्रामई तुलसी प्यारी ।
पती सुपननुइ नारीयै ॥ सरस्वती०
राधा से प्रीत करी कृष्णमुरारी ।
राज कर पती सेत भारीयै ॥ सरस्वती०
सतभामा बस गए मुर्लीधारी ।
सुछेक करनम सारीयै ॥ सुपति सेत करनं०
सर्वसुखदायक पति आज्ञाकारी ।
धर्मछि पननुइ धारीयै ॥ सर०
माजे हेंदी अरमान भारी०
ग़रीब हेंदी कोमारीयै ॥ सरस्वती रिशियन हेंदी कोमारीयै ॥
बिशंपती बेंइये हेंदी बड़ खुशहाली ।
करनम पुत्रे कारीयै ॥ वारे०
हशों की करिये सेवाकारी ॥
दान हेने मुर्लीधारी आये ॥ सरस्वती०
आशिष कोछे करी सरस्वती प्यारी ॥
हथजूरी करी नमस्कारीयै ॥ वारे शीश नोऊ०

गुरु दया करनम यमे कार कारी ।
तसुनदुई चरनछी नमस्कारं । असी०
सूरजनारायं पडिंतने धर्मछि सारी ।
करनम यमे (पुत्रे) कारीयै । वारे निर्विघ्न०
संतान नाम वोयं सूर्य सम प्रज्वलान ।
लशने परिवार सारीयै ॥ वोयं०
बिशनपती बेईं करी मनज़िम यारी ।
दान हेने कृष्णमुरारी आये ॥ सर०
माजे हेंदी कुंज बदारी ।
सर्वछि सरस्वती प्यारीयै ॥ सारी करछे परधन सारीयै ॥
हिहुर ग्रह करनम सर्व सुख खानी ।
क़दम चोन नेरने मुबारिक ॥
लशने पती सेत युग २ सारी ।
दान हेने राज तेजधारी आये ॥ सरस्वती०

(१०) पंडित सूरजनारायण हाकसर के सुपुत्र राजेन्द्रनारायण हाकसर और पंडित हृदयनारायण हाकसर के सुपुत्र पंडित ब्रजनारायण हाकसर के जनेऊ के बसन ।

नोट-रिश्तेदारों के नाम नं० ६ के वसन में देखिये । ये वसन धर्मपत्नि पंडित विशम्भरनाथ ठुलल के बनाए हुए हैं ।

हींज़ै: प्रथम गनेशस्तो गजमुख धारो ।
विघ्न निवारों से नमस्कार ॥ सारे०
शिव शंकर हर त्रजटाय धारो ।
विश्व कर्तारों से नमस्कार ॥
शिव शंकर सेत पार्वतछि भारी ।
हटि हल्लाहल तो शेश मुकटछी ॥
त्रभुवन होंदु स्वामी शिव शंकर ।
सदा शीवने सेवाकारी ॥
पनिन राज्ञाय शरनस लजिये पारी ।
दितनम बाल गोपालीये ॥
बिशननारायं पंडितने धर्मछि सारी ।
सरुपनारायन सन्तान सारी ॥
सूरजनारायन पडितं गृह गुलज़ारी ।
राजेन्द्र लालछुम बालब्रह्मचारीयै ॥

रामनारायं पंडितने इक़बालसारी ।
लजिये बाग़ सब ज़ारीयैं ॥
हिर्दे नारायन पंडितने बाग़ बिहारी ।
लालछुम बाल ब्रह्मचारीयैं ॥ ब्रजन० बाल ब्रह्मचारीयैं०
रुप नारायन पंडितने लजि बाज़ारी ।
शिवनारायन जीवने पोशे अम्बर ॥
जैनारायन जीवने शोभा कारी ।
जगदीशनारायं जीवने दिल शाद शाद ॥
सर्वछि बांदो .खुशगै सारी । लालछुम बा[illegible] गं[illegible]न्द्र०
गरभस यले आओ पाने औतारी ।
सीमत्तो दिवता अस्तुति कर ॥
बूज़ित्तो बांदौ .खुश ह्रालो । ब्रजन०, या लाल[illegible]म०
थन उञतम ज़ातुक सेद जोग सारी । लालछुम बा[illegible]राजेन्द्र०
कुलवन्त माजदइ दिवता पूज़नेसारी ।
लशनम तो ब्रज इन्द्रर औतारीयै ॥ लालछुम० । ब्रजन०
ज़रसम यले आओ पाने औतारी ।
स्वर्गवर वीथगै सारीयै ।
लशि जै तो करि जै पुत्रेकारी । लालछुम०, राजेन्द्र०
ह्रम पेठ गुम जै गोपालस ।
ब्रह्मनौ गत करु ज़ोयपत ।
पंडितौं आज्ञा दितुने सारी ॥ लाल० या ब्रजन०
कै सतांम कुरये सुत औतारी ।

मुच तल सिरिय तो चन्द्रमाद्राय ।
डिकस चानिस जै जै कारी ॥ लालछुम०
अबी छे आइये रुपयन तो मोहरे ।
गोरं वथयौं खोरन तल ।
गोर करे आहिये छिए हितकारी ॥ लालछुम०
खलता अनुमै सुत औतारी ।
गनेश राज्ञे जगे आए ॥
पारवति परिमशोर छिए साहाय करी ।
लाल छुम बाल० ॥ अजन० ॥
ऐरावत आये चांय सवारी ।
लशनम बब सूबेदारीयै ॥ लशनम तो बाप सूबेदारीयै ॥
नसान असरत गोवान गंधारी ॥ लालछुम०, या राजेन्द्र०
गुरिस चानिस सारे तैयारी ।
जीन पोश मुक्त झालारीयै ॥
अब वोय निरनै मितरेकारी । लालछुम, या अजन०
वारे कारे करिये गायत्री पूजा ।
साहाय रोजने चन्द्रभागा ॥
वोहे तोहे निरनै मितरेकारी ॥ लालछुम० या राजेन्द्र०
सूरजनारायन पंडितने नाम ओस भारी ।
आस हम तो कर हम सोर त्यारी ॥
क्या सन कर है ख़ुशहाली ।
दिल कु अरमान हित गौ सारी ॥

क्या सन वर है ख़ोश हाली ।
चानिस याद् करानसारी ॥
असरुज़ अरमां सारीयै ।
तमे नियू अरमान तूर कुन्नसारी ॥
सार छुन रोज़ान यम संसारी ।
लालछुम बाल ब्रह्मचारीयै ॥ राजेन्द्र०

---

(११) पण्डित ब्रजनाथ जी चुकबत्ता की पुत्री भुवनेश्वरी की शादी के वसन

लेखिका—धर्म पत्नि रायबहादुर पं० विशम्भर नाथ ठुलल

वर का नाम–कैलाशनाथ ज़ुतशी ।
वर के पिता के नाम–शम्भूनाथ जी ।
वर के दादा का नाम–राजारामजी ।

हींज़े: काली देवी छि सेवा कारी ।
ब्रजनाथ लज़ने सब ज़ारी ॥
माजे राज्ञाय चरनस लगहापारी ।
तमे दिव सती भवनी ॥
दिवताय दितुनम आही भारी ।
बरने राज तेज धारी आस्रो ॥

सतीय मिलनुइ पाने पतीय।
हर सेतछि विश मोहनी ॥
वुसयते जायने सतीको मारी। बरने राज तेज धारी०
गरभस यले जाओ कोरे कोमारी।
खुशगै बादौ सारीयै ॥
कूरी छि अरमान बिन्दों वेंइये भारी। वरने० मुकुट बिहारी०
ज़ातुक चोन लिखुपाने नारायनन्।
वशिष्ठ गोरने वखने आओ।
कूरी छि इक़बाल जैजै कारी ॥ वरने गिर्वरधारी आए
असवने मुख जाये उमा ब्रारी।
तवै पती मिलनुइ कैलासनाथ ॥
पतो वूज पाप चोन दूर गसेसारी। वरने० बांके बिहारी आए
बागस लजीय पोशे अम्बारी।
भवनीश्वरी छि स्वयम्बर ॥
अगरे नगरे के राज़े आए सारी ॥ वरने० राजतेजधारी आए०
उन्नाव शहरस के आए महाराज़ा।
जयमाल गसहा कैलास नाथ।
आकाशे पोशे वथरुनगै भारी ॥ वरने भुवनेश्वरीये आए।
सिजवरु चोन आए कुन्दन कारी।
सोला सींगार सेती हेत ॥
गंछित्तोगस हं, भवन कुमारी ॥ वरने०
बरात चांई आए हिम खुत भारी।

नगरे २ के राजा सेत ॥
हरदोई शहरस लजी सबज़ारी ॥ वरने बांके बिहारी आए
बर चाओ महाराजे सहरे लोनुइ ।
उछित्तो खुशगै सारीयै ॥
आकाशे पोश वथरुन कौमारी ॥ वरने०
सबयले बीठुइ बांदौ सारी ।
सभाछि प्रज़लान सारीयै ॥
विगस चानि फूल बूटे कारी ॥ वरने मुर्लीधारी आए
द्वार पूज क़रान छि पार्वती परीमशोर ।
गनेश राज़ने आए ॥
ब्रह्मन पोरनम वेदा सारी ॥ वरने०
लगनस बीठुई उमा ब्रारी ।
अगनस कुनरोज़ अथ दारित ।
ज़रभस रुतीभल मगज़ सारी ॥ वरने०
अथ वाज़ करी तो फेरे कोमारी ।
सन्मुख दर्पन दर्शन करसर ॥
सोंपुनुई कैलासनाथ जीवंईनारी ॥ वरने०
दै भत्त खेवान छि रुपै संदी थाली ।
पार्वती परिमशोर खेवानछि ॥
मेलुइ हिहुर चोन मोहरे भारी ॥ वरने०
पोशे पूज़ करान छी जटाधारी ।
सेतछि उमा प्यारीयै ॥

कंगपोश पंपोश गुलाब मोतिया सारी ।। वरने०
ब्रजनाथजीवने कोरे कोमारी।
राजाराम जीवने औतारी ।।
तो हे दो न वोतुइ वेवाकारी ।। वरने०
ललता माजी हेंदी सीठा थारी।
थले २ रछन नरवस पेठ ।।
इछुम मांजे हेंदी कुंज बरदारी। बरने०
वरथा सेतीराज़ कर इतीयै।
लशने वरथा भौनीशुरियै ।
अटल भवनुक राज़ कर भारी ।। वरने०
क़दम चोने नेरैने मुबारिक।
सारी वारे रोज़ेने ।।
नौगृहसे रोज़ने साहाकारी। बरने०
अर्ज़ी वरने रिशी-कोमारी आए।

---

(१२) पंडित ब्रजनाथ जी चुकबत्ता के सुपुत्र पंडित दुर्गानाथ चुकबत्ता के शादी के बसन

लेखिका—रायबहादुर मिसेज़ विशम्भरनाथ जी ठुलल

नोट—रिश्तेदारों के नाम नं० ११ के बसन से मिलान करो।

वर की दादी का नाम-बिन्द्रो ।

वर के दादा का नाम—द्वारकानाथजी चुकबत्ता ।

वधू का नाम-अजकुमारी।

हींजै : प्रथम गनेशस तो गजमुखधारी ।
विघ्न निवारों से नमस्कार ॥
शिव शंकर हर त्रजटा धारी ।
विश्व कर्तारों से नमस्कार ॥
काली देवी छि साहाकारी ।
दुर्गानाथ औतारी आओ ॥
माजे राझाये चरनस सेवा कारी ।
तसुनदुइ दया सारीयै ॥
बिन्द्रो माजी पूज़ करु भारी ।
इम बाग़ लजने फुलवारी ॥
कोछे कित दितनम बाल गोपाली ।
दुर्गानाथ औतारो आओ ॥
अंगछी शोभा कारीयै ॥
मीना कार नेकटाइ टोप मुल छुई भारी । दुर्गा०
यले महाराई द्राए सवारी ।
सेत छी राजै सारीयै ॥
पत्ते पत्ते छिए मोरछल बर्दारी । दुर्गा०
लैंन्डो चालीस सब्ज़े जोड़ा भारी ॥

द्वारिकानाथ पंडितने धर्मछि सारी ।
लजनै बाग़ सबजारी ॥
ब्रजनाथ जीवने संतान सारी । दुर्गानाथ०
थन पले प्योह् पाने औतारी ।
त्रुथ चोन प्रजलान सारीयै ॥
उछित्तौ बांदौ बरु ख़ुशहाली । दुर्गानाथ०
वशिष्ट गोर सप्त ऋषी आए सोनमारी ।
गह् चोन उछने सारीयै ॥
कही ब्रम सुत छुइ बड़ इक़बाली दुर्गानाथ०
दिवना छिनरे करनुइ सारी ।
गंगा छी जीवंई चरन्न तल ॥
माता से आयुर दा दितुम भारी । दुर्गानाथ०
ब्रजनाथ पंडितन लालछुम भारी ।
थले थले रछनम न खरीत ॥
हावस से नाम थोवु दुरगानाथ औतार । दुर्गानाथ०
सत शहरस जातुक चोन गो जारी ।
कुन्न खेत मीलुइ न औतारी ।
सरस्वती करनै मंजीमयारी ॥ दुर्गानाथ०
हर्दोई शहरस असे आये सारी ।
समीत्तो बांदौ सारीयै ।
बले आए पेश बाए सर्दार सारी ॥ दुर्गा०
कोट पतलून छी तरह दारी ।

सेत छुई मोटर गाड़ीयै ॥
सोरेछु बीदुई पनुन २ जाए ॥ दुर्गा०
बरात चांई द्राय बड़ बाज़ारी ।
उछने सब नरनारीयै ॥
महाराज़स सेत अंगरेज़ी बाजा ।
गैस लैंप रोशन सारीयै ॥
कवल की रौशन प्रज़लान सारी ॥ दुर्गा०
किशनलाल पण्डितने बरसाए सारी ।
ब्रजनाथ पंडितने औतारी ।
किशनलाल कूरी छी स्वयम्वर भारी । दुर्गा०
अंज़ी वरने ब्रजकुमारी आओ ।
द्वार पूज़ करानछी दुर्गा औतारी ॥
सेतछि ब्रज नारीयै ।
गनेश राजई आज्ञा कारी ॥ दुर्गा०
पार्वती परिमशोर लगनस बीठुई ।
अगुनस कुंडस अथ दारीत ॥
रुकमनी बरने आए कृष्ण मुरारी । दुर्गा०
पाने ब्रहन करानछि तीज़ा कारी ।
सेत छी विश्वकोमारीयै ॥
ब्रह्मनौ पूरनै वेदासारी । दुर्गा०
अथ वोज करानछि गिर्वरधारी ।
सेतछि राधाप्यारीयै ॥

द्रिवता आए परनुम भारी । दुर्गा॰
दै भक्त खेवान दुर्गा औतारी ।
सेत छि अजन प्यारीयै ॥
वो हे तोहे सोपुने मित्रे कारी । दुगा॰
पोशपूज करानछि बांके बिहारी ।
पंपोश कुङ्क पोश सारीयै ॥
ब्रह्मा वोह तुइ मंगला चारी ।
दुर्गानाथ डिक चोन बडहन शोभाकारी ॥
सारी वारे रोज़ेने ।
सोने सदी तख़्म पेठ राज कर भारी ॥ दुर्गा॰
गटे मंजे गाश आए सिरिय द्रावभारी ।
नुश छी शोभा कारीयै ॥
पेठ छि जेबान न मुक्तसारी । दुर्गा॰
पालकि चानीस बादले झालर जेबान ।
वोइ आए पननुई राजस पेठ ॥
क़दम चोएं नेरनै इतीयै ।
सारी वारे रोज़ने ।
सिरिये तो चन्द्रमा प्रज़लान सारी । दुर्गा॰
पांतुर तुलित्तो उछियै सारी ।
दिलगै शाद २ सारीयै ॥
नुशछिक सुन्दर शोभा कारी । दुर्गा॰
अर्जी वरने ऋषी कोमारी आप।

(१३) पंडित ओंकारनाथ जी रैना के सुपुत्र ब्रजमोहननाथ (सोकट जी) रैना के जनेऊ के वसन

लेखिका—रायबहादुर मिसेज़ विशम्भरनाथजी ठुलल

नोट—रिश्तेदारों के नाम नं० ८ के वसन में देखिए।

हींज़: पनुन गोरन शरनस लजियेपारी।
तंसुन दुई सारीयै।
श्री ब्रजनाथ कृपसेन लाल ज़ाओ भारी।
असे आए गसे सारीयै।
ब्रमनाथ रिशियन ध्यानसुइ धरीज़ै।
तसुंदी चरन्नकी नमस्कार॥
माजे राज्ञाये शरनस लजियेपारी।
दितुनम बाले गोपालीयै॥
देवीप्रशाद पंडितने दरमछि सारी।
लालछुम बालब्रह्मचारीयै। ब्रजमोहन या लाल छुम०
विशम्भरनाथ पंडितने सतांनसारी।
लंजी लंजी बाग़ सबज़ारीयै॥
ओंकार जीवने शोभाकारी। लालछुम०
गरभस यले ज़ओ पाने औतारी।
समीस्तो दिवता अस्तुति कर॥

थन यले प्यौंहं सुत औतारी ।
खुशगै दिवता सारीयै ॥
उछतम ज्ञातुक सेत जोग सारी । लालछुम या, ब्रजमोहन०
जसवन्तीमाजी दिवता पूज़नै सारी ।
लशनं तो ब्रजमोहन औतारी आओ
तिम जार त्रुज्ञीत्तो पाने औतारी । लाल०
ज़रमसयले जाओ सुत औतारी ।
सुर्गवरथी गै सारीयै ॥
लशनम तो करनम पुत्रे कारी । लालछुम बाल ब्रह्मचारीयै
हुम पेठ गौ जै गोपालस ।
ब्रम नौ गत कोरु जोयपत ॥
पंडितौ आज्ञा दितुनैसारी । लालछुम बाल ब्रह्मचारीयै
कैसताएं कुरु पै सुत औतारी ।
मुचतल सिरिय तो सन्द्रमा द्राय ॥
डिकस चानीस जै जै कारी । लालछुम०
गोर हेतछी उमनईरु मैव भरित थाली ।
स्वांहा छी करान औतारीयै ॥
अगनसे रोज़ने साहाकारी । लालछुम०
वोए सुई मैं बब सूबेदारी ।
मामू सेंदी सोने लर धारीयै ॥
वोइ सुइ निरनै मित्रे कारी । लालछुम०
भिचा छि मंगनुइ सुत औतारी ।

अथ छी चार्नास प्यारीयै ।
भित्ता छी गोरन दितवै सारी ❀लालछुम बालब्रह्मचारीयै
विद्या छी हेवान लाल औतारी ।
प्राननाथ गोरछि मन्त्र देवान् ॥
वैसुं सोपतुक शुद्ध ब्रह्मचारी ❀ लालछुम०
मंडलू चानीस फुल बूटे कारी ।
लक्ष्मीनारायं करुनै सते रङ्ग ॥
गगन की दिवता यते आए सारी ❀ लालछुम०
वारै दान चानीस दोद इस्तैमाली ।
राजकिशोरी पुष्फी सेठा जान ॥
नीरन्जननाथ ने मोहरे दितुभारी ❀ लालछुम०
क्षिमा पोश करान छी लाल औतारी ।
रिशी मुनीछी वेद वखनान ॥
नौग्रह से रोज़ने साहाकारी ❀ लालछुम०
ख़लतस चानीस बेल बूटे कारी ।
पटकस चानी आशदारी ।
ज़ेगस तो सेहरे मुख शुबानी ❀ लालछुम०
विगिस पेठ आश्रो लाल औतारी ।
उछित्ती ख़ुशगै सारीयै ॥
पेशेरस सें रोज़जे चन्द्र कलाप्यारी ❀ लालछुम०
बरात आइ मंज़े बाज़ारी ।
सेतछि दिवता सारीयै ॥

नसान असर सगे वान गंधारी ॐ लालछुम०
पार बलगस हा ब्रजमोहन औतारी ।
स्नान ध्यान तै प्राणायाम ॥
बैसुइ निरजै विद्याधारी ॐ लालछुम०
सरजुए पूज करी आए गिर्धारी ।
गोरस निश ब्यूठ सारीयै ॥
वादृछि करान दिनुक नारी ॐ लालछुम०
पन्नुइ आही दितुनै सारी ।
ब्रम दितुनै कल शुक लौ ।
सीताए रामचन्द्र साहाकारी ॐ लालछुम०
वोए तोहे निरने मित्रे कारी ।
उछनम पुत्रकार कारीयै ॥
लशने बब तो माज पुत्रे सारी । लालछुम०

(१४) पं० गोपालनारायन हाकसर के सुपुत्र पं० गोविंदनारायन हाकसर की शादी के वसन

हींज़: प्रथम गनेशस तो गज मुख धारो ।
विघ्न निवारो से नमस्कार ।
शिव शंकर हर त्रिजटाए धारी ।

विश्व कर्तारों से नमस्कार ॥
शिव शंकर सेत पारवती छि भारी ।
हटी हलाहल तो शेश मुकटछी ॥
त्रभुवन होदुं स्वामी शिव शंकर ।
सदा शिवस सेवा कारी ॥
दितुनम बाल गोपालीए
लशनम तो करनम पुतरेकारी ।
प्रसीद्ध नारायन औतारीयै ॥
आकाशे पेठ यले सिरिए द्रावभारी । प्रसीद०
पनुन गोरन शरनस लजिए पारी ।
तसुन दई दया सारीयै ॥
अमनाथ ऋषीयन ध्यांन सुइ धरीजै ।
तसुन दी चरन्न छी नमस्कार ॥
रिशी अमनाथ कृपासेत लाल जाओ भारी ।
अशे आए गशे सारीयै ।
तिमि जार बुजीत्तो शारकाय सारी । प्रसीद०
गर्भस यले जाओ पानेकारी ।
खुशगै दिवता सारीयै ॥
प्रसीद नारायं औतारीये ।
थन यले प्योहं पाने औतारी ॥
ख़ुशगै बांदौ सारीयै ।

ऐज़ली गंडी २ मग है जारी ॥
माजे शार काए करने रछपाली। प्रसीद०
ज़ातुक चोन लीखु लक्ष्मीनारायनस।
श्रीकृशन्न वखने आए॥
कर्म बड़ धर्मवान परओपकारी। प्रसीद०
बेंइयन करीये ख़ातिर दारी।
माज़ेसे रोज़ हित कारीयै॥
बबकी करीये ताबेंदारी।
त्रुज़ित्तौ ख़ुशगे सारीयै॥ ❀
बिशननारायन लजी सबज़ारी।
द्वार पूज़ करानछी प्रसीद औतारी॥ ❀
शामनारायन सन्तान सारीयै।
गोपालनारायन लंजी सबज़ारी॥ ❀
पार्वती परीमशोर मिलनै भारी।
प्रसीदनारायन जीवने पाणिग्रहणछि॥ सेतछि राधाप्यारियै॥
वोहे तोहे करने कर्म इक़बाली।
प्रसीदनारायन०॥ ❀
दान छुहेवान प्रसीद औतारी।
अगनसकुन रोज़ अथदारीत॥

दानछु करान हश हिहुर सारी । प्रसीद०
लगनस व्यूिढम राज तेजधारी ।
खेतछी लक्ष्मी नारीयै ॥
अगनकु शोभफल सोंप नुक सारी । प्रसीद०
अथवास करान गिर्वरधारी ।
नौगृह साहा कारीयै ॥
वोहे तोहे करने मितरेकारी । प्रसीद०
दै भत खेवान प्रसीद औतारी ।
नख छी पद्म कोमारीयै ॥
पोशपूज करानछी प्रसीद औतारी ।
विहित्तो सरस्वती नारीयै ॥
पनडिक करीज्ञै राज़कोमारी । प्रसीद०
वोहे सुख सोंपनुक पोशे अम्बारी ।
डिक छुई शोभा कारीयै ॥
नारायन रोज़ने सहायकारी । प्रसीद०
हिहुर चोन छुम बड़ सूबेदारी ।
डेक सर्दारी नेरेने ॥
सोने सन्दी तख़्त पेठ राज़ कर भारी । प्रसीद०
गटे मज्ञे गाश आए सिरो द्रावभारी ।
नुराछी शोभा कारीयै ॥
चांए पेठ छीज्ञे बानसुन मुख़्तसारी । प्रसीद०

पालकिए चानिस वादले झालर ज़ेबान।
वोय आय पननुई राज़े पेठ॥
क़दम चोंई नेरेने 'मुबारिक।
सारी वारे रोज़ेने।
सिरियै तो चन्द्रमा प्रज़लान सारी।
मितर गै ख़ुशतो दुशमन पैमाली॥
पांञुर उछित्तौ दिलगै शाद शाद
नुशछिक सुन्दर शोभा कारी।
साहाए रोज़ने लक्ष्मी महरानी। प्रसीद०

(१५) कर्नेल पंडित कैलासनारायण जी हाकसर के सुपुत्र पं० प्रकाशनारायण जी हाकसर की शादी के वसन

(लेखिका–मिसेज़ शम्भूनाथ जी ठुलल)

वर के पर दादा का नाम–धर्मनारायण जी।
वर के दादा का नाम–हरनारायण जी॥
वरकी पर दादी का नाम–शामरानी।
वर की मां का नाम—कैलाशरानी॥
वधू का नाम–सुभद्रा।
वधू के पिता का नाम–डाक्टर कैलासनाथ जी कारज़ू–वकील

हीज़्रै प्रथम गनेशस्तो गज मुख धारी ।
विघ्न निवारों से नमस्कार । सारे०
शिव शंकर हर त्रजटाय धारी ।
विश्व कर्तारों से नमस्कार । हरी०
माजे राज्ञाये' चरनस लजिए पारी ।
फर्नम सदा रद्गपालीयै । माज०
बिशन नारायन पंडितने तपस्या भारी ।
लजि़ये बाग़स सारीयै । वारे०
धर्मनारायन पंडितने धर्मछि सारी ।
तसुन दुइ सन्तान सारीये । यमे०
हर नारायन पंडितने पूज़ा धारी ।
यमे बाग़स फुली फुलवारीयै ॥
यमे लंजे लंजे सबज़ारीयै ।
शांराय माज करी सेवा करी ॥
देवी देव पूज़ने सारीये । राज्ञा०
कोछे नुश दितुनं बाले गोपाली ।
प्रकाश नारायन औतारीये । पाने०
थन यले प्योहं सुत औतारी ।
गृह छुए प्रज़लान सारीयै । वारे०
हावस से नाम थोउ प्रकाश औतारी ।
बांदौ ख़ुशगै सारीयै । असी०
ज़ातुक चोन लिखू लक्ष्मीनारायनस ।

गिरह उच परनुइ सारीयै । प्रकाश०

कह गोर सुतछि बड़ इक़बाली ।

प्रकाश नारायन औतारीये । लशनम०

कैलासनारायन जीवने लालछुम भारी ।

थले २ रछनम सारीयै । माज०

कैलासरांय माजी बड़ ख़ुश हाली ।

सुतछि डेक सर्दारीथैं । वारे०

क़दम वोंय करनंगृह गुल ज़ारी ।

प्रकाश नारायन औतारीयै । वारे०

त्रवेनी अन्दरुके सर्दार भारी (वकील कारी)

सोयम्बर करनुइ कोमारीयैं । सुभद्रा सोयम्बर करनुई भारी

दूर २ शहर के राजे महाराजे

आकाशे दिवता सारीयै । त्रुथे०

जयमाल मेलये सुभद्रा प्यारी ।

प्रकाशन नारायन औतारीये । गले मेलये प्रकाशनारायने

ग्वालियर महराजे सर्दार सेती

वरात चाने सारीयै । अज़ीं बरात०

कोट पतलूनछि तरहदारी (फ़ैशनदारी)

अगंछि शोभाकारियै । सोरे०

मीनाकार नेकटाइ टोप मुल भारी

प्रकाशनारायं औतारीयै । वारे०

फ़िटने लैंडो सब्ज़े जोड़ी भारी ॥
सेतछुई मोटर गाड़ीयै । संजी सेत
आकाशे ऐयरप्लेन दिवतासारी ॥
सेतछुई सुन्दर नारियै । सोरे०
पनुन २ जाय बीठुई सारी ॥
प्रकाशनारायन औतारीयै । बारे०
ख़लतस महराज़े फुलबूटेकारी ॥
करयै झल २ कारीयै । हीरे भरयै झल झलकारी
पटकस चाने मुक्त झालारी ॥
ज़्रेंगेंपे जड़िये माणियां लाल । सारे ज़्रेंगे पे०
हुमपर सेतछि मुक्ट अलंकारी ॥
प्रकाशनारायन औतारीयै । पाने०
हस्तीपेठ महाराजा सोन अम्बारी ॥
कुन्दन मीनाकारीयै । सोरे०
हस्ती घोड़े लोदुयो सोने मुक्त सारी
कवलगैस रौशान सारियै । अज़ीं
पते पते छिए मोरछल बर्दारी ॥
प्रकाशनारायन औतारीयै । अज़ीं वरने ऋषी कोमारीय ।
वारात चाने गोरों का बाजा ॥
आराश आतशबाज़ी भारियै । असी०
बरात चोन द्राय बड़ बाज़ारी ॥
उछने आय नर नारीयै । सारी०

वरने आये सुभद्रा प्यारी ॥
प्रकाशनारायन औतारीयै । अज्ञी वरने कृष्णमुरारी आये
कैलाशनारायन जीवने लालछुम भारी ॥
त्रभुवननाथने कौमारीयै (कूरीयै)
इक़बालनारायन जीवने इन्तज़ाम कारी (करीत्यारी)
कैलाशनाथने द्वारे आये । अज्ञीं०
द्वार पूज्ञकरान सेतछुई नारी ॥
प्रकाशनारायन औतारीयै । अर्जी वरने गिर्वरधारी आए
पार्वती परिमशोर लगनस बीठुई ॥
गनेश राज्ञने जंगे आये । तव०
सर्व सामानछि मेव भरित थाली ॥
हुम छुई करी नर नारीयै । वारे०
प्राणी गृहण करानछि सुभद्राप्यारी ॥
प्रकाश नारायन औतारी यै । वारे वरने बांके बिहारी आए ।
हथ ज़ुरी करयै सप्त प्रदक्षण ।
आकाश दिवता साक्षी आये । नारी सेत दिवता सारी आए ।
वोहे तोहे नेरनै मित्रेकारी ।
सारी दितुने आशोने । सारी दितुनम आशीर्वाद
नौगृह से रोज़ने साहाकारी ।
प्रकाशनारायन औतारीयै । वारे वरने राज्ञ कोमारीयै ।
दृभत लोदुयो सोने सन्द्दी थालस ।

खेवान प्रकाश तो प्यारीयै । वारे खेवान प्रकाश हेत नारीयै
वरथा सेती राजकर इतियै ।
सारी बारे रोजने । सोरे ब्रह्मण दितुने आशेने ।
दूध जल वोहे तोहे मित्रेकारी ।
प्रकाशनारायन औतारीयै । अंजी वरने सुभद्रा प्यारीयै ।
पोषपूज करानछि कृष्ण मुरारी ।
सेत छुइ राधा प्यारीयै । अजीं सेत छुइ रुक्मनी नारीयै
आकाशे दिवता पोशे वशु नगै ।
गुलाब पोष मोती बेला सारीयै । जुही कुङ्गपोष मोती०
कारजू गृह छुई मैह मैह कारी ।
प्रकाशनारायन औतारीयै । वारे वरने राज तेजधारी आए
आकाशे दिवता आए सेत नारी ।
करनम जै जै कारीयै । चाने०
वेदुक वोनुहे दिवता (रिषी) सारी ।
काशी के पण्डितने करु श्रुति गान । सारे०
तव सेत थाल हेत अगिन देव आये ।
शोभे फल कोछे दितु भारीयै । प्रकाश कोछे फल दितुयै सारीयै
स्वर्गवासी पित्र दिवता सारी ।
पोशे हेत दितुने आशीर्वाद । सारे पोशाहेत दितुने आशेने ।
युत्तांय गंग जमना सरस्वतियै ।

लशानम चाने जूरीयै। प्रकाश लशानं चाने जूरीयै
सूर्य तो चन्द्रमा प्रजलान सारी।
डेक सर्दारी नेगेनै। वारे०
लशानम करन बड़ शुभकारी।
प्रकाशनारायन औतारीयें॥ अर्जी वरने
सर्व सुखदायक पति आज्ञाकारी।
मिलनुई सुभद्रा नारीयै। प्रकाश०
हिहुर, हश करिजे सेवाकारी।
बेंईछि खातिरदारीयै। सारी०
नुश छेकसुन्दर विद्याधारी।
प्रकाशनरायं औतारीयै। अजी वर्नें राजकोमारीआए।
आशीर्वाद कोछे करी प्रकाश तो नारी।
हंथ जुरी करी नमस्कारीयै। दुइ०
हिहुर चोन मिलनुइ बड़ सूबेदारी।
हाउस सेत करी यमे कारीयें। वारे०
सोरे छु इन्तजाम खातिरदारी।
प्रकाशनारायन औतारीयै। अजी वर्नें ऋषी कोमारीआए
भाजेराज्ञांय चरनस लजिय पारी।
तसुनदुइ दयासारीयै वोयं करनं सदारक्तपालीयै
बारम्बर छिनमस्कारी।
प्रकास नारायं औतारीये। अजी वरने सुभद्रा प्यारीआए
पांबर उछित्तो दिलखुश हाली।

नुश छुई सुन्दर मालीयै ॥ सुभद्रा०
लशने पति सेत युग २ सारी
मुबारिक क़दम चोन नैरने । वारे०
कैलाशनारायन जीवने बाग़ बहारी
प्रकाश नारायं औतारीयै । अर्ज़ीं०
धर्मनारायं पंडितन धर्मछि सारी
करनम निर्विघ्न कारीयै । वारे कर्नम यमे शुभ कारीयै
संतान नाम वोयं सूर्य सम प्रज़लान
लशने परिवार सारीयै । वारे०
लंजे लंजे लजनै सर सब्ज़ारी । प्रकाश नारायं औतारीयै

(१६) पंडित मनोहरनाथ जी कुंजरु के सुपुत्र जयनाथ कुंजरु की शादी के वसन

(लेखिका--मिसेज शम्भूनाथ ठुलल)

वधू के पिता का नाम – स्वर्गीय नन्दलालजी कौल, जज
बधू के भाई का नाम—औतार कृष्ण, महराज कृष्ण
बर के भाई का नाम—रामनाथजी कुंजरु
वर की माता का नाम—रामेश्वरी
वर के दादा का नाम—बैजनाथजी
वर की दादी का नाम---बैजरानी

हींजँः प्रथम गनेशस्तो गज मुख धारी ।
विघ्न निवारों से नमस्कार ॥ सारे०

शिव शंकर हर त्र जटाय धारी ।
विश्व कर्तारों से नमस्कार ॥ हर०
पनिन ज्वालाए शरनस लजिय पारी ।
तसुन तुइ दया सारीयै ॥ दितुनम् बाल गोपालीयै
बैजनाथ पंडितने धर्मछि सारी ।
बाग़स लंजी सबज़ारीयै॥
मनोहरनाथने सतांन सारी ।
लंजे लंजे खिलि फुलवारीयै ॥ वारे सुत चोन बाग़ बहारी
बैज़रायं माज करी देवि सेव भारी ।
दिवता छि नज़रे कोरुयै ॥ सारे०
ज्वाला देविछि सहायकारी ।
जयनाथने औतारीयै ॥ वनें करनं सदा रछपालीयै
रामेश्वरी माजछि कोछे कित डालये ।
सुतछि डेक सर्दारीयै ॥ यमे०
थने यले प्योहं सुत औतारी ।
खुशगै बांधव सारीयै ॥ सारे घरछु प्रज़लान सारी
ज़ातुक चोन लिख पाने नारायनस ।
सुतछि बुलन्द इक़बालीयै ॥ यमे०
अयनाथ नाम थोउ हाउस सेती ।
छिकस चानिस जय जय कार ॥ वारे०
क़दम चोन करनं गृह गुलज़ारी ।

लशने जयनाथ औतारीयै । वारे०

इन्दौर शहर के सर्दार भारी

करनुई स्वयम्वर कुरीयै । अर्ज्री०

दूर दूर शहर के राजे महाराजे ॥

आकाशे दिवता सारीआए । उत्थे०

हथछि जयमाल राजकोमारीयै (श्यामा प्यारी)

मेलिये जयमाल जयनाथन । गले०

आकाशे पोशे वशु निगै सारी ॥

लशने जैनाथ औतारीयै । अर्ज्री वनें रिषी कोमारी आए

जोधपुर महाराजा सर्दार सेती ॥

बारात चाने सारी आये । अर्ज्री०

कोट पतलूनछि फैशनदारी ॥

अंगछि शोभा कारीयै । सारे०

मीनाकार नेकटाई टोप मुल भारी ॥

लशने जैनाथ औतारीयै । वारे वनें मुर्लीधारी आए

फिटन लैन्डो सब्जे जोड़ी भारी ॥

सेत छुई मोटर गाड़ीयै । अर्ज्री वरने०

आकाशे ऐयरप्लेन दिवता सारी ॥

सेत छुई सुन्दर नारीयै । सारे०

पनुन पनुन जाय बीठुइ सारी ॥

लशने जैनाथ औतारीयै । अर्ज्री वनें कृष्णमुरारी आए

ख़लतस महराजे फुल बूटे कारी ॥
करयै भल भल कारीयै । हीरे भरये भल भल कारियै
पट कस चाने मुक्त भालारी ॥
जेगे पे जड़िये मणिये लाल । सारे जें.गे०
हुमपर रोतछि मुकुट अलंकारी ॥
लशने जैनाथ औतारीयै । अज़ी वनैं ऋषीकोमारी आए
हस्ती पेठ महराजे. सोने अम्बारी ॥
कुन्दन मीना कारीयै । सारे०
हस्ती घोड़े लोदुयो सोने मुक्त सारी ॥
कवल गैस रौशन सारीयै । यते०
पत्ते पत्ते छिए मोर्छल बर्दारी ॥
लशने जैनाथ औतारीयै । अज़ी वनैं गिर्वरधारी आए
बारात चाने गोरों का बाजा ॥
आरायश आतशबाज़ी भारीयै । वारे०
वारात चोन द्राय बड़ बाज़ारी ॥
उछने आय नर नारीयै ।
वनैं आए शम्मन प्यारीयै ॥ सारे०
लशने जैनाथ औतारीयै । अज़ी वनैं राधा प्यारी आए
मनोहर पंडितन् लाल छुम भारी ॥
नंदलाल पडितने कूरीयै
रामन्नाथ जीवने करी तैयारी

औतारकिशन जीवने द्वारे आये।
द्वार पूज़ करान जैनाथ औतारी।
सेतछि राधा प्यारीयै ॥ वारे०
नौगृह् से रोज़ने साहाकारी।
लशनं जैनाथ औतारीयै। वारे वर्ने मुकट बिहारी आए।
पार्वती परिमशोर लगनस बीठइ।
गनेश राज़ने जगे आये ॥ यते०
सर्व समानछि मेव भरित थाली।
हुमछि करि नर नारीयै ॥ जैनाथ हुमछि करी श्यामा सेत
पानीग्रहण करानछि शामा प्यारी।
जैनाथने औतारीयै ॥ अर्ज़ी वर्ने शम्मनप्यारी आए
हथ चांय रटि करी सप्त प्रदक्षण।
आकाशे दिवता साक्षी आए ॥ सारे०
वोहे तोहे नेरैने मित्रेकारी।
सारे दितुने आशोने ॥ जैनाथ दितुने०
वेदछि पोरुहे दिवता सारी।
जैनाथन औतारीयै ॥ वरने राजकुमारी आए
दैभत लोदुयो रुपै संदी थालस।
जैनाथ तो शामा खेवानछि ॥ शामा जैनाथ हेत खेवानछि
वरथा सेती राज़कर इतिये।
सारी वारे रोज़ने ॥ सारे ब्राह्मण दितुने आशोने।
दूध जल वोहे तोहे मित्रेकारी॥

लशने जैनाथ औतारीयै ।। वनैं बांके बिहारी आए
पोशपूज करानछि कृष्णमुरारी ।
सेत छुइ राधाप्यारीयै ॥ शामासेत०
आकाशे दिवता आए सेत नारी ।
करनंम जय जय कारीयै ।। सारे०
वेदुक वोनुहे ब्राह्मण ऋषी सारी ।
काशी के पंडितन करु श्रुतिगान । सारे०
तव सेत थाल हेत अगिन देव आए ।
शोभे फल कोछे दितु भारींयै ।। सारे०
स्वर्गवासी पित्र दिवता आए सारी ।
पोशे हेत दितुने आर्शीवाद ॥ सारे०
थुत्तांए गगं जमुना सरस्वत्यै ।
लशनं चाने जूरीयै ।। जैनाथ०
सूर्य तो चन्द्रयम प्रज्वलान सारी ।
डेक सर्दारी नेरैंने ।। वारे०
लशनं तो करनं बड़ शुभकारी ।
जैनाथने औतारीयै ।। अर्जी वनैं ऋषी कौमारी आए
सर्वसुखदायक पति आज्ञाकारी ।
मिलनुइ शाम नारीयै ।। वारे०
हुशाछुइ करनुइ सेवाकारी ।
बेइछि खातिर दारीयै ।। सारे०
मुशा छेक लायक़ विद्याभारी ।

जैनाथने औतारीयै ॥ अ ंजी वनैं गिरवरधारी आये

आशींवाद् कोछ्के करी जैनाथ औतारी ।

हथजुरी कर नमस्कारीयै ॥ सारे०

सोरेछु इन्तज़ाम ख़ातिरदारी ।

औतारकिशं करी यमे कारीयै ॥ असे०

रामनाथ जीवने बड़ खुशहाली ।

जैनाथने औतारीयै ॥ अ ंजी०

पांत्रुर उछित्तो दिल गए शाद् शाद् ।

(लशने पति सेत युगयग सारी ।)

मुबारिक क़दम चोन नेरैने ॥ वारे०

ज्वाला देर्विछि दया सेती ।

करनं पुत्रे कारीयै ॥ असे०

मनोहरनाथने बाग़बहारी ।

लशने जैनाथ औतारीयै ॥ अजीं वनैं श्यामा०

बैजनाथ पंडितने धर्मछि सारी ।

करनं निर्विघ्न कारीयै ॥ वारे०

संतान नाम वोयं सूर्य सम प्रजलान ।

लशने परिवार सारीयै ॥ वारे०

लंजे लंजे सरसब्ज़ारीयै ।

जैनाथने औतारीयै ॥ अजी वनैं श्यामा प्यारी आए

—o—

(१७) पंडित गोकरणनाथजी ठुलल के सुपुत्र तथा पंडित विश्वनाथजी ठुलल के भतीजे पंडित त्रिलोकीनाथ ठुलल की शादी के वसन।

(लेखिका श्रीमती कमला ठुलल)

वर की दादी की मां का नाम—रम्मो माजी।

वर की दादी का नाम—नन्दरानी ठुलल।

नोट:—रिश्तेदारों के नाम नं० १ और नं० ७ के वसन में देखो॥

हींज़ प्रथम गनेशस तो गजमुखधारो, विघ्ननिवारोंसे नमस्कार॥
शिव शंकर हर त्रजटायधारी, विश्वकर्तारों से नमस्कार॥
सदा शिवई सेवाकरी, नन्दो माज भक्तछि भारीयै॥
श्रीगुरु कृपा करनमभारी, तसुन्दुइ चरनछि नमस्कार॥
विश्म्भरनाथ पंडितने धर्मछिधारी, तसुनदुई संतान सारीयै॥
सरुपरांयमाज करु देवी पूज़भारी. वारास लजि सवआरीयै॥
लक्ष्मीरांय माज जाव लाल द्राव भारी. त्रलोकीनाथ औतारीयै।
गोकरननाथने फूली फुलवारी, कुलछुई रौशन कारीयै॥
त्रलोकी गृह कोरु शोभा कारीयै, वारे कुल दीपक सुत भारी।
शम्भूनाथ पंडितने सन्तान सारीयै। गसहा न करहा खुशहाली।
सुतछि उछ असी करु खुशहाली, वब तो माज सदक़े वारीयै॥
रम्मो माज तप करु लालछि पाली, थले थले करी रछपालीयै॥
विशंरांय माजछि अरमान भारी, उछि न मिलनम कारीयै॥
वोय०

बिश्वनाथ जीवने लाल इमि पाली ।
सुतछि मुल्य छुइ भारीयै ॥ पनुन०
पाने रछनुइ जे़र दस्तकारी ।
त्रलोकीनाथ औतारीयै । पाने ०
माजे शारका चरनन्छी लजिये पारी ।
करनम सदा रछ पालीयै ॥ (लालन)
गुरु कृपा सेत गृह गुलज़ारी ।
करनम लालन करीयै ॥ वारे० (यमे०)
विश्वनाथ जीवने लाल छुम भारी ।
इकबालशंकर जीवने कूरीयै ॥ सुशीला
लखनऊ शहरस स्वयम्बर भारी ।
राजे महारा़जे आय सारीयै ॥ यते०
जयमाल मेलये सुशीलाप्यारी ।
त्रिलोकीनाथ औतारौयै ॥ वारे०
आकाशे पोशे वर्शुन गै भारी ।
ख़ुशगै बांदौ सारीयै ॥ वारे०
कानपुर शहर के आए नरनारी ।
बरात चाने सारीयै ॥ यते दिवता बागत चाने आए
मोटरकारछि चाए सवारी ।
कवल गैस रौशन सारीयै ॥ सेतछि०
खलतस चांए फुल बूटेकारी ।
करयै झल झल कारीयै । हीरे भरये०

पटकस चाने सुक्त झालारी ।
ज़ेंगे पे जड़िएमंणिए लाल । सोरे०
हुमपर सेत छुइ मुकट अलंकारी ।
त्रलोकीनाथ औतारीयै ॥
बारात चोनद्रात्र बड़त्राज़ारी ।
सेतछि वाजा भारीयै ॥ वारे०
आकाशे दिवता ऐयरीप्लेन सारी ।
आय सेत सुंदर नारीये ॥
कोट पतलून छि तरह दारी ।
टाइ कौलर टोप मुल भारीयै ॥
देशान देश के रईस भारी ।
आए मोटर कारीयै ॥
बिश्वनाथ जीवने अरमान भारी ।
कौलन हेंदी द्वारे आए ।
पनुन पनुन जाय बीठुइ सारी ।
कौलन करी ख़ातिर दारीयै ॥ असे०
उछितौ खुश गै बादो सारी । त्रिलोकीनाथ०
द्वारपूज़ करानछि कृष्णमुरारी ।
सेतछि रुक्मन नारीयै ॥
पार्वती परिमशोर लगनस बीठुई ।
गनेशराजने ज़गे आए ।
सर्व सामान छि मेव भरीत थाली ।
हमछुइ करी नर नारीयै ॥ वारे०

पाणिग्रहण करानछि सुशीलाप्यारी ।
त्रलोकीनाथ औतारीयै ।
हथ चांए रटि करी मग्न प्रदक्षण ।
आकाशो दिवता साक्षी आए । सारे०
वोहे तोहे नेरेने मित्रैकारी ।
सारे दितुने आशेने ॥
वेदकु वोहनुहे ब्राहमन सारी ।
काशी के पंडितन करी श्रुतिगान ।
नवग्रह रोज़ने साहा कारी ॥ त्रलोकीनाथ औतारी आ०
दैबत लोदुयो रुप मंदि थालस ।
खेवान त्रलोकी सेत नारीयै ॥
वर्था सेति राज़ कर इतिये ।
सारी वारे रोज़ने ॥ त्रलोकी०
युत्तांए गंगा जमना सरस्वतीयै ।
लशने चोंए ज़ूरियै ।
दूध जल वोहे ताहे मित्रैकारी ॥ त्रिलोकीनाथ०
पोषपूज़ करानछि मुर्लीधारी ।
सेतछि राधाप्यारीयै ॥ वारे०
आकाशो दिवता पोशे वथरान छुई ।
गुलाब जूहि मोती बेला सारीयै ॥
कौलन गृह छुइ मह मह कारी ॥ त्रिलोकीनाथ०
तव सेत थाल हेत अग्नि देव आए ।

शोभफल कोछे दितु भारीये ।
स्वर्गबासी देवता पित्र सारी ।
पोशे हेत दितुने आशोनै ॥
सूर्य तो चन्द्रयम प्रथलानसारी ।
डेके सदारी नेरेने ॥
लशनम तो करनम वड़ शुभकारी ॥ त्रिलोकीनाथ०
पामुर उछित्तो ख़ुश गए सारी ।
लशने चाने ज़ूरिये ॥
सर्व सुखदायक पति आज्ञा कारी ।
मिलनुई सुशीला नारीयै ।
हिहुर की करनम सेवा कारी ।
बेइ छि ख़ातिरदारीयै ॥ सारी०
पनो बेइ ए करी मंजिम यारी ।
हऊस्से सोरे तैयारीयै ॥ सारी०
नुशछेक लायक़ कुंज बरदारी ।
त्रलोकीनाथ औतारीयै ॥
मनहरन जीबने दिल शाद भारी ।
ठुलल ईंदि बाग़ वहारीये ।
विशम्भरनाथने धर्मछि सारी ।
करनम पुत्रै कारीयै ॥
कितनुक करनम सदक़े वारी ।
स्वर्ग खे अरमान सारीयै ॥

बिश्वनाथजीवने वड़ी ख़ुश इक़वाली।

उछनम तव यमें कारीयै।

संतान नाम वोयं प्रज़लान सारी।

लशने परिवार सारीयै।

लजै लंजे हिहुर गृह लंजे सब्जारी।

कदम चोन नेरेने मुबारिक।

श्रीगुरु कृपा करनम भारी॥ त्रिलोकीनाथ औतारीयै

नं० (१८) पंडित ओंकारनाथजी रैना के सुपुत्र पंडित ब्रजमोहननाथ रैना की शादी के वसन।

नोट—कुछ रिश्तेदारों के नाम नं० ७ में देखो।

श्रीहींजै ब्रह्मरूप कमल नैन विश्वकर्तारी. श्रीनित्यानन्द औतारीयै।

त्रकोटी दिवता रोम रोम वासी, पाने नारायनछि नमस्कार॥ असे श्रीगुरु०

ब्रह्मा विष्णु महेश गनेशस, विघ्न निवारोंसे नमस्कार॥ सारे०

म्रजे राज्ञाए चरनछी लजियेपारी, करनम सदा रछपालीयै॥ सारे०

दितुनम वाल गोपालीयै॥

आनन्दी माजकरी तपस्या भारी।

बाबा खट खटे स्वामी गई शरने॥ श्रीब्रह्मनाथ स्वामी गईशरने

विश्वम्भरनाथने धर्मछि सारी।

ओंकारनाथ जीवने सबज़ारी। सारे०

विशंपति कोछे दितु बाल गोपाली ।
ब्रजमोहन नाथ औतारीयै । पाने०
थने यले प्योह सुत औतारी ।
ख़ुशगै बांदौ सारीयै ॥
जातुक चोन लिखु पाने भगवानस ।
ग्रह उच्च परनम सारीयै । सुतछि बुलन्दइक़बालीयै
अजुध्या नगरई शोभाकारी ।
श्रीरामचन्द्र राज छत्र धारीयै । पाने रामचंद्र
पनुन आप द्वापर कृष्णरूप धारी ।
करनुई लीला भारीयै । वोयं०
तसुन्दुइ फरनम ग्रह गुलज़ारी । ब्रजमोहननाथ औतारीयै
त्रलोकीनाथ जीवने राज कोमारी ।
सोयम्वर करनम भारीयै ॥
दूर २ शहर के राजा महाराजा ।
आकाशे दिवता सारीयै । यते०
शोभा उछित्तौ राजकोमारी ।
जयमाल मेलये ब्रजमोहननाथ । गले मेलऐ जयमाल ब्रज०
सर्वछि बांदौ करी ख़ुश हाली ।
करनम जय जय कारीयै । वारे०
श्री गुरु आज्ञा सेत करी कारी ।
पोशे वरशुनगै सारीयै । अर्ज़ी०

गुरु कृपा सेत ग्रह गुलजारी
करनम पुत्रे कारीयै । अजी०
सर्व सुखदायक श्रीगुरु चरन सेवा।
श्रीगुरु चरन्नछी नमस्कार। असे०
विशम्भरनाथ पंडितने लालछुमभारी।
निरन्जनाथने कोमारी।
देहली शहर के सेठ साहूकारी॥
बरात चाने सेती आऐ।
कोट पतलूनछि तरहदारी॥
अंगछि शोभा कारीयै ।
मीनाकार नेकटाई टोपमुलभारी॥
सेत ठुई मोटरकारीयै।
आकाशे ऐयरप्लेन दिवतासारी॥
सेतछि सुन्दर नारीयै।
हस्ते घोड़े लोदुयो सुन मुक्त सारी॥
कवल गैस रौशन भारीयै।
फिटन लैन्डो. सब्जे जोड़ी भारी॥
ब्रजमोहन औतारीयै । अजी वरने राज कोमारी आए
खलतस महराजे झल २ कारी ।
हीरें भरये फुल बूटे सारीयै।
पटकस महराजे मुक्त झालारी।

जँगे पे जड़ऐ मणीयां लाल। सारे०
हुम पर सेतछि मुकुट अलंकारी।
शहरस शोभा न्यारीयै।
पत पतछि मोरछल बरदारी। ब्रजमोहन०
ओंकारनाथजीवने करी तैयारी।
त्रलोकीनाथने द्वारे आए। वारे सोपोरी हैंदी०
कामेश्वरनाथ जीवने इन्तज़ामकारी।
जीवननाथने ख़ुश हाली ॥
द्वारिकानाथ जीवने करी यमे कारी।
त्रलोकीनाथने दिल शादी ॥
जगदीश नारायन जीवने शोभाकारी। ब्रज०
बरात चोन द्राव सरे बाज़ारी।
उछने आए नर नारीयै।
पनुन पनुन जाय बीठुइ सारी।
त्रलोकी नारायन ख़ातिर दारीयै। करी०
वरने आए राज कोमारी। ब्रजमोहन०
द्वारपूज करान ब्रजमोहन औतारी।
सेत छुइ राधा प्यारीयै ॥ सेत छुइ राज कोमारी०
बागस खोरनम छत्र सरधारी।
रतन सांजी वारीयै। हशछि रतन सांजी वारीयै
नौ ग्रह से रोज़ने साहाकारी। ब्रजमोहन औतारीयै
पार्वती परिम शोर लगनस बीठुइ।

गनेश राजने जगे आए।
सर्वसामानछि मेव भरित थाली ।
हुम छुई करी नरनारीयै ॥ व्रज० नारीसेत करी स्वाहाकारी।
पाणीग्रहण करानछि राजकोमारी। व्रज०
हथ चांय रटि करि सप्त प्रदक्षण।
आकाशे दिवता साक्षी आए॥ सारे०
वोहे तोहे नेरैने मितरेकारी।
सारे दितुने आशोने।
वेद्कु वोनुहे ब्राह्मणसारी॥ व्रजमोहन औतारयै
दैबत लोदुयो रुपे संदी थालस।
खेवान ब्रजमोहनहेत राजन सेत॥ वारे०
बरथा सेती राजकर इतिये।
सारी वारे रोजने। ब्रजमोहन ब्राह्मण दितुने आशोने
पोशपूज करानछि कृष्णमुरारी।
सेतछि रुक्मनी नारीयै॥ सेतछि राजकोमारीयै
आकाशे दिवता पोशे वशुनगे।
गुलाब पोश मोती बेला सारीयै॥ जूही गुलाब पोश०
सोपारी ग्रह छुइ मैह २ कारो। ब्रज०
आकाशे दिवता आये सेत नारी।
करनम जय जय कारीयै॥ ब्रज०
वेदा पोरुहे रिषी मुनी सारी।
काशी के पंडितने करु श्रुतिगान।

तव सेत थाल हेत अगिन देव आये ।
शोभेफल दितुनम भारीये ॥ ब्रज०
स्वर्गवासी ब्राह्मण दिवतासारी ।
पोशे हेत दितुने आशेने । सारे०
युत्तांए गंग जमना सरस्वतियै ।
लशने चाने ज़ूरीयै । ब्रज०
सूर्य तो चन्द्रयम प्रज़लान सारी ।
डेक सर्दारी नेरेनै ।
लशनम तो करनम वड़ शुभकारी ॥ ब्रजमोहननाथ औतारीयै
सर्वसुखदायक पति आज्ञाकारी ।
मिलनम पतिव्रत नारियै ।
हिहुर तो हश की सेवाकारी ॥
वेइं छि ख़ातिरदारीयै ।
नुश छेक लायक़ कुन्जबर्दारी । ब्रजमोहन०
आशीर्वाद् कोशेकरी ब्रजमोहन नारी ।
हथजुरी करी नमस्कारीयै ।
पालकिय चानिस बादले झालर ज़ेबा ।
क़दम चोन नेरेने मुबारिक ॥ वारे०
पाम्बुर उछित्तो दिल ख़ुशहाली ।
नुशछिक सुन्दर मालीयै ॥ वारेनुश छक लायक़ सारीयै ।
हिहुर ग्रह करनम सबज़ारी ।
लंजे लंजे गुलज़ारीयै ।

शामपती पुफछुइ करी मंजमयारी । ब्रज०
बिशम्भरनाथ पंडितने धर्मछिसारी ।
वारे कारे यमे कारीयै । सोरे०
श्रीगुरु कृपा करनम भारी ।
निर्विघ्न करीये कारीयै । यमे०
वोयं तोयं दितुनम सुखसंसारी ।
ऐश्वर्यवान आयंवान भारीयै ।
धर्म धुरन्धर भक्ति भाव सारी ।। ब्रज०

नोट...न०१८ के वसन का । ७७ सफे में देखो ।

रिश्तेदारों के नाम नं० ८ में देखो नं० ७ ग़लतलिख दिया है

करनम सदा रक्षपालीयै [दितुनम बाल गोपालीयै] इन इन दोनों टुकड़ों में से कोई सा एक टुकड़ा गाये ।

(१९) पं० पृथीनाथजी रैना की सुपुत्री जनककुमारी की शादी के वसन ।

बधू के दादा का नाम—रुपनारायन

बधू की दादी का नाम—रुपरानी

बर के पिता काम—पण्डित इक़बालकिशनजी

बधू के चाचा काम—मनोहरनाथजी

बधू की मां का नाम—सुहागरानी

बर के भाई का नाम—उत्तमकिशनजीकौल

बधू के चचेरे चाचा का नाम---पण्डित बिशनलालजी रैना
वर का नाम--- रुपकिशनजी कौल
ह्रींज्य प्रथम गनेशसतो गजमुखधारी।
विघ्ननिवारों ने नमस्कार ❀ सारे विघ्न०
शिव शंकर हर त्रजटा धारी।
विश्व कर्तारों से नमस्कार ❀ हर विश्व०
माजे राज्ञाय चरनस लजियै पारी
दितुनम जनक कुमारीयै ❀ तसुनदुईकरने रछपालीयै॥
रुपनारायन पंडितन सन्तान सारी,
लजियै बाग़स सवज़ारीयै ❀
रुपरांय माजकरी देबी पूज भारी,
सुहागरांय माज जाय कूरिये ❀
जनक कुमारी करु स्वयम्बर छुई ❀
राजे महराजे आए सारीयै॥ यते राजे०
शोभा उछितो जनक कुमारी।
मेलये जयमाल रुपकिशनन ❀ जनक मेलये०
सर्वछि बांधौ करी ख़ुश हाली।
करनम जै जै कारीयै ❀
इक़बालकिशन पंडितन लालछुम भारी।
मनोहर नाथन कूरियै ❀ जनक पृथीनाथ जीवने कूरियै।
उत्तमकिशनं जीवने करु तैयारी।
बिशनलाल जीवने द्वारे आए ❀ पृथीनाथेन द्वारे आए।

सिंजवरु चोन आए वड़ सामानस ।
सारी मीना कारीयै ❀ फुलबूटे मीना कारीयै ।
बरात चोन आए बड़ बाज़ारी ।
सेतछि सर्दार सारीयै ❀
हस्ती घोड़ ऐयर प्लेन मोटर कारी ।
पृथवी से आकाश रौशान गैस ❀ सारे पृथ्वी०
हस्ती पेठ महाराज़ा सोने अम्बारी ।
कुन्दन मीना कारीयै ❀ सारी कुन्दन०
खलतस महराज़े फुलबूटे कारी ।
करियै झलझल कारीयै ❀ हीरे भरिये०
पटकस महराजे मुक्त झालारी ।
ज़ेगे पे जड़िए मणिए लाल ❀ सारे ज़ेगे पे जड़िए हीरेलाल
हुमपर सेतछि मुकुट अलंकारी ।
दान हेने कृष्ण मुरारी आए ✱ जनक दान हेने रुपकिशं०
द्वार पूज़ करानछि लक्ष्मी नारायनस ।
जनक सेत रुप औतारीयै ✱
पार्वती परिमशोर लगनस बीठुई ।
गनेश राजने जगे आए ✱ पाने गनेश०
रुपकिशं जीवने हथ चांय रटियै ।
आकाशे दिवता साक्षी आये ✱ यते नारी सेत०
पानी ग्रहन करानछि जनक कुमारी ।
दान हेने रुप औतारीयै ✱ जनक दान लेने रुप औतारीयै ।

सर्व सामनछि मेव भरी थाली ।
हुमछि करी नर नारीयै * वारे हुमछि०
हथ चांय रटि करी सप्त प्रदक्षण ।
हिहुर थोउ मोहरन खोरन तल *
वोहे तोहे नेरैने मित्रे कारी ।
दान हेने गिरवर धारीयै * जनक दान हेने रुप औतारीयै ।
दै भक्त लोदुयो रुपै संदि थालस ।
खेवान रुप सेत जनक प्यारीयै * वारे खेवान रुप हेत जनक०
बरथा सेति राज्ञ करि इतियै ।
लशने वरथा जनक कूमारीयै *
कलां तो सत्ताएं राज्ञ करि इतियै ।
ब्राह्मन दितुनै आशेने जनक सारी वारे रोज्ञ ने ।
नौगृहे से रोज्ञने साहाय कारी ।
दान हेने रुप औतारीयै * जनक दान हेने रुप औतारीयै
परिमशोर बरख़स तो माज्ञे पार्वतियै ।
पतिसेत जनक करी पोशेपूज्ञ * वारे०
आकाशे दिवता पोशे वशुंनगै ।
गुलाब पोश मोती बेला सारी *
त्रिकोटी दिवता आए सेत नारी ।
करनम जय जय कारीयै * कूरि की०
रैना गृह छुइ महमहकारी ।
दान हेने राज तेजधारी आए * जनक दान हेने वांके०

वेदकु बोनुहे दिवता सारी।
काशी के पंडितन कोरु श्रुति गान * सारे०
तव सेत थाल हेत अगिन देव आए।
शोभेफल कोछे दितु कूरियै * जनक०
स्वर्ग वासी दिवता ब्राह्मन सारी।
पोशे हेत दितुनै आशीर्वाद * सारे०
युत्तांए गङ्ग जमुना सरस्वतीयै।
लशाने वर्था जनक पतियै * वारे लशाने०
सूर्य तो चन्द्रयम प्रजालान सारी।
डेक सर्दारी नेरेने * जनक डेक०
लशानं तो करनं बड़ शुभकारी।
दान हेने बांके बिहारी आए * जनक०
जिमी साली ग्रामई तुलसी प्यारी।
पति सुपन्नुई नारीयै * जनक पति०
राधा से प्रीति करी कृष्ण मुरारी।
राज करी पति सेत भारीयै *
सर्व सुखदायक पति आज्ञाकारी।
धर्मछि पन्नुई धारीयै * जनक धर्मछि०
लंजै लंजै लजनम सर सबजारी।
दान हेने गिरवर धारी आए * जनक०
आशीर्वाद कोछे करि जनक पतियै।

हथ .जुरी करी नमस्कारीयै *

रुप नारायन पंडितने धर्मछि सारी।

करनं निर्विघ्न कारीयै * सारी०

सन्तान नाम वोय सूर्य सम प्रज्लान।

लशने परिवार सारीयै *

माजे हैंदी कुञ्ज बरदारी।

नं० १ पृष्ठ ३ के आगे का मैटर देखिये।

(१३)-प्रेम भाव से हो अथवा हो दया भाव से ही स्वीकार।
ठुकराना मत प्रेम निमन्त्रण, छोटा सा हैं ये उपहार॥

(१४)-कर वन्दना उस प्रभु की जो रम रहा सर्वत्र है।
सानन्द सेवा में समर्पण यह निमन्त्रण पत्र है॥
करके विनय स्वीकार मेरी आप निश्चय आइए।
निज बन्धु बांधव युक्त इस ग्रह को पवित्र बनाइए॥
देखिए श्रीमान् यह सब आप ही का काज है।
स्मरण रखिए आप पर निर्भर हमारी लाज है॥
है प्रतीक्षा आपकी उत्सव अलंकृत कीजिए।
गौरव हमारे लिये कुछ कष्ट भी सह लीजिए॥

(१५)-उत्सव की शोभा बढे, बढे, हमारा मान।
दर्शन देने की कृपा, अगर करें श्रीमान्॥

पंडित पृथ्वीनाथ जी चक के "रुद्रयज्ञ" पर वसन

लेखिका—रायबहादुर हेडमास्टर मिसेज़

बिशम्भरनाथ जी ठुलल ।

प्रथम गनेशस तो गजमुखधारी ।
विघ्न निवारों से नमस्कार ॥ सारे विघ्ननिवारो०
शिव शंकर सेत पार्वतछि नारि ।
हटि हल्लाहलनो शेश मुकटछि ॥
त्रिभुवन होदूं स्वामी शिवशंकर ।
शिवशंकर संत दिवता आए सारी
वेद ध्वनि करी भारियै ॥
पाने आए भगवति जाए साडान ।
गणेश राजे जंगे आए ॥
पार्वति परिमशोर खर्वासित वसिए ।
प्रथीनाथ कोरु रुद्रै यज्ञ ❀
बैजनाथ पंडितने धर्मछि सारी ।
शौनाथ जीवने शोभाकार ❀
नारायन दर्शन दितुने सारी ।
पृथीनाथने इक़बालीयै ॥
प्रथीनाथ मैना रांय परोपकारी ।
करिए यज्ञे भारियै *
असे गरे कोरु रुद्रे जगछि ।
त्रिकोटी देवता समित आए *

काशी अन्दुरक ब्रह्मन आए सारी
वेदा वन्हुवे सारीयै *
ब्राह्मन वेदुक मंन्त्रे सरुप छुई ।
अगन्स कुडल ज्वालाए द्राय *
हथ ज़ूरिद् पियु पाने भगवानस ।
छुक चोन स्वामितो छिय चोन दास *
नारायन दर्शन दितुनै सारी ।
पृथीनाथने इक़ बालीयै *
सदा शिव ज्ञाय रोदु कैलास थानस् ।
जटे छसे गंगा तह्टे वासित *
शिव शंकर दर्शन दितुने साक्षात ।
जन्म सुफल सुपननुई *
ओंकार सुरिजे पवित्र थानस ।
ह्टे छिए चानस ओंकार *
पवित्र मन कोरु ओंकार सुरिजै ।
नारायण दर्शन दितुने सारी *
पृथीनाथने इक़बालीयै ।
स्वांमिस पूज़ा करान पाने *
दितुनै मन्त्रे सदा शिव ।
नवे पेठ आए आकाश बानी ।
चाने सदा जै जै कार *
पृथीनाथ मैनाराय जगस वीठुई ।

महा लक्ष्मी आए थालभरी *
ब्राह्मन दितुने आशीर्वादछि ।
तवे पेठ देवता पोशे वरुथन *
आकाश पेठले गंगाए द्राई ।
विष्णु दर्शन करित आई *
शिवत जटा अदरुक साई ।
भागीरथ तप सेत आई *
हरे गंगा इसे नमस्कार ।
नारायन दर्शन दितुने सारी * पृथीनाथने इक्र बालीयै
पूर्व जन्मीछि तपस्पा भारी *
तव पेठ करि कार्य कारिये ।
भोलानाथने दर्शन देवान *
वो छस आधीन चाइये ।
ब्राह्मन वेदुक मन्त्रे वनिहै *
आकाशे शब्दे वासई *
सदा शिव ध्यान करी सोरि पाप सलिने ।
अगनि के लव से प्रज्वलानछि *
स्वामि से आज्ञाए मिलनुइ भारी ।
दितुने आहित आशीर्वाद *
ब्रह्मावर्तै देवता आए सारी ।
ऋषी वाल्मीक शिव रूप गे *
सोई जग सोपुने यते सारी ।

ब्रह्मावर्त्त स्वामी आए।
चाने दर्मछि दर्शन मीलुई ।
चाने डिकसछि जै जैकार।
गगनक सन्द्रयम तो भूमिपक सारी ।
देवता सेतछि करु प्राणायाम् *
यते पेठ ब्रह्मा विष्णु द्राए ।
पाने सरस्वती यते आए *
ब्राह्मए दुपयते पुशकर आए ।
पुशकुरा गोरछि तीर्थानस *
नारायन हेतछि अस कित डाले ।
नारायन जीवन आशीर्वाद *
विशनुपद कमल नैन चतुर्भुजधारी ।
सुदर्शन चक्रछि साहाकार *
असे कोरुए अश्वमेध जगछि ।
लक्ष्मी सेत नारायन पाने द्राए ॥
पंडित प्रभूज़ी वरनान वेदान सारी ।
राम शिव वेदकि शिक्षाकार *
महानंद पंडितने वेदा परान ।
रामभट्टछि पंडितने वेद ध्वनियै *
जानकि प्रशाद वेद ध्वनि सोरान।
मानचन्द्र पंडितने यजुर्वेद्रि *
अगनस कुन्डस समि समि व्यूठई

अथन सेतछि उमनहोर *
सारि छि पंडित स्वाहा करान ।
स्वाहा छिये भारीये *
गंगाए स्नान कोरु वेद ध्वनि सेत ।
पानि गंङ्गाए कलश हेत *
सिरये तो सन्द्रमा प्रज्ञलान सारी ।
डेक सरदारी नैरेने *
मित्र गौ खुशनै दुशमन पैमालि ।
+कानपुर रइसन हिम्मत हारी *
पृथवीनाथ चू हिम्मत कोर ।
माजे शारकाय कोरु कार्य कारीये *
माजे राज्ञाय नामस लजिये पारी ।
तसन दुई दया सारीये *
लशमन तो करनम रग्मे कारयकारी ।
पृथीनाथने इक़बालीथै *
इतछि नारायन जीवन थानस ।

+नोट—ये वंसन कानपुर में मेरी पूज्यनीया दादीने बनाऐ थे । वहां हर समय बहुत प्लेग फैला करता था तब सब काश्मीरियों से पृथ्वीनाथजी चक ने कहा कि चन्दा करके रुद्र यज्ञ करिये । चन्दा कई काश्मीरी लोगों ने दिया नहीं इससे उन्होंने आपही रुद्र यज्ञ करवाया ।

लक्ष्मी पनुने पाने आए *
यते पेठे छिए भंडारभारी ।
दीवान सादान सारी आए *
निरजनं निरजन निरकार करिज्ञै ।
निशि ध्यान ईये हम तो सुइ ध्यान सुरिज्ञ *
यते पेठ जमना पाने आई ।
सहस्त्रभुज सेत दर्शन दिव *
सारी तीर्थन सादान आई ।
महात्मा सारा यते आए *
दितुनम पौरुने आशीर्वाद ।
सारन् दितुने आशीर्वादछि *
गरुड़े खसित तो नारायन वसिये ।
तसे नारायन गसे शरने *
तपस्या सेत कोरु परिक्रमा सारी ।
परिक्रमा सेत छुई देवता नसान *
तते मिलनुइ भगवती पाने ।
उछित्त शरनं तले आई *
ब्राह्मण भोजन सर्वजन सेतछी ।
विहितछि नारायन कोरु दर्शनस *
उछित उत्सव सर्व ख़ुशहाली ।
पृथीनाथने इक़बालीयै *

सच्चिदानन्द की स्तुति।

नोट—* के दो टुकड़े हर वार दुबारा गाए जांयगे।

ब्रम शङ्कर छी ब्रम आधारम्।
स्वारथी छीये ब्रम शङ्कर।
पाने पतीछी अमर पतिये *
सत छी स्वामी सच्चिदानन्द *
गौरापती यमे शरीरै।
रथै नारायन जीवने।
सदा भगवते रोजने दाहिने।
बाहिने पारवति पानेछी।
सन्मुख रोजने गनेश राजै।
ब्रह्मा बिश्नु यते साहा।
पाने पतछी अमर पतिये *
सतछि स्वामी सच्चिदानन्द *
गुरुवनी छीग भक्ति।
शक्ति नारायन जीवनी॥
गुरुवनी जरने बोलागस।
श्रीये पूरन ब्रमयने। पाने पतीछी अमरपतिये *
यते आए स्वामी नाथ उछने लजी।
हटे चोंई पोशे माल वोसुनिये॥
स्वामी शङ्करानन्द पोशे बोलागस।
शरनन तले बोसाइये
दितुने आशीर्वादे सारी॥

असे कोरुने नमस्कार।
दिवता कोरुने पोश वथुरनछी।
मुनीश्वर कारी जै जै ध्वनि। पाने पतीछी अमर पतिये *
अन्दर छी नेत्र खुली ज्ञानसीती।
अन्धकार दूर गसे अन्द्रे आई गाश॥
इछी अमृतसागर तुल्य।
अमृत ब्रुज्ञब्रुज्ञ कोरु स्नानछी॥
पाने अन्दर छि अमृत सागर।
उछि उछी करिते सारी ध्याने।
पानछि उछिने आनन्दरुप। पाने पतीछि अमरपतियै *
हे नारायन माया चानी।
असछि गरबे बासीयै॥
सुइ करिनै छिमा सारी।
चानी माया सारीयै॥
गोरन शरन्नछीए तीरथ।
गङ्गा जलछी निर्मल मन॥
गुरुवनि शब्दे यते आइ।
सुरीजे रुक्मनी कीत॥
भागीरथगै पातलि लोकक।
गंगै जमने छीयन सत॥ पाने पतीछी अमर पतिये *
इन्द्रराजछी पृथ्वीपतियै।
नारायन छीय जगतपतियै।

नारायनछीय मायापतियै।
लक्ष्मी वानछि पुरुषे सारी ।
गरबस छीय भारीयै ॥
हरिय क्रोध गए गुरिय रछिये ।
गुरुवन क्रोधस छिय न था ॥ पाने पतीछी अमर० ॥
बोज़ने सत्य कथ म्योंइ ।
पूज़ने चानी मनोकामना ॥
नन्दराई थाल भरित आइ ।
गुरुवनि सुनीयै मोक्ते माल ॥
पनिन गोरन सुनीय हटस माल ।
आकाशे दिवता यते आए सारी ॥
जै जै ध्वनि लंजी सारीयै । पाने पतीछी० *
महिरलोकक दीवी पाने ।
माया भरित जगत रूपी ॥
माया सहित मृत लोकी ।
गुरुवनी छी आज्ञाकारी ॥
पदि पदि चानी शरनन ध्यान ।
पली पली सुरातचानि ध्यान ॥ पाने पतीछी० ॥

पति की अस्तुति ।

लेखिका---राय बहादुर मिसेज़ विशम्भरनाथजी दुलल

नारायन जीवनी यमरूप धारी ।
पती रूपै सीती आए ॥
पती रूप हेत नारायनछी ।

पाने हरिछि पतीय रूप ।। वोछक पाने दीवी रूप ।। १ ।।
सुपंनुने जान ब्रह्म रूपै ।
सुई छीए नर नारायन ।।
पूरन आत्मा सोंपनै चानी ।
पती रूपछी पाने नारायन ।।
करानछी परोपकार्य सारी ।
पाने नाथ यते आई ।।
पाने हरीछी पतीयरूप ।। वोछक पाने दीवी रूप ।। २ ।।
पाने हितुनै दिवताय थानस ।
दर्शन दितुने सारीयै ।।
यते पाने कृतारथ गए ।
चानी शरन्नतल आई ।।
पाने हरीछी पतीय रूप ।। ३ ।।
ततछी दीवी तो शीवशंकर पाने ।
आकाशे दिवता पोशे वथरान ।।
गन्धर्व यते गान करान ।
यतछी दीवी पाने आई ।।
वाक्य वनुहै सारीयै ।
पाने हरीछी पतीयरूप ।। ४ ।।
सुछिक दीवी पाने यते ।
पानेछी सत दीवी बीहित ।।
सुबोज्ञ मोंई कथ सत ।
दीवीरूप सीत आई ।।

पाने हरीछी पतीयरूप ॥ ५ ॥
दितुने सारीनी रूतिये पोश ।
यम अस्तुति गोपाली बोजनै ॥
रौंअने साहा घनीशाम ।
पाने हरीछी पतीय रूप * ॥ ६ ॥
सुकरी सुइहरी करीये ।
नाम छीये चोनी नै मैनिये ॥
भक्ती जनछी धुनन्नी हरी नामकी ।
दिवकी नन्दे बोशरनम् ॥
पाने हरीछी पतीय रूय ॥ ७ ॥

आत्म अनुभव ज्ञान

लेखिका—धर्म पत्नि रायबहादुर पं० बिशम्भरनाथ जी ठुलल
हेडमास्टर गवर्मेन्ट स्कूल—कानपुर।

ये आत्मानुभव मेरी पूज्यनीया दादी श्रीमती स्वरुपरानीजी ठुलल का है।

नोट – ब्रह्म ज्ञान करितो ब्रह्म पद पाई, हे महेशो अद्भुद दिव। ये दो टुकड़े हर दफे, साथ २ गाए जांएगे।

ओंकार अन्दरछि ब्रह्मा बिष्नु।
तवे पेठ बिदुं शक्ति वलवान् ॥
वेदान वनान यतिये वाकछि।
शिवस द्वारेक पूजा कोर ॥

ब्रह्म ज्ञान करित्तो ब्रह्म पद्पाई ❀
हे महेशो अद्भुद दिव ✳ ब्रह्म ज्ञान करितो ॥ १ ॥
चाने दर्शन जीवन वृथाछि ।
शरथा चि चाने दर्शनस ॥
यते वते चांई महिमा सारछी ।
दर्शन चाने वड़ अभिलाष ॥
ब्रह्म ज्ञान करित्तौ ब्रह्मपद् पाई ।
हे महोशो अद्भुद दिव ॥ ब्रह्म ज्ञान करितो० ॥ २ ॥
श्रधा सीती गुरुवनि भक्ति ।
तवे मिलनुइ ब्रह्म तै ब्रह्म ॥
शिव शंकर यले अन्द्र द्राई ।
तत नारायन पाने द्राय ॥
ब्रह्मज्ञान करितो ब्रह्मपद् पाई ।
हे महशो अद्भुद दिव ॥ ३ ॥
गुप्तै करियै ध्यान तै सारी ।
परि पूर्ण सर्वत्र व्यापकछि ॥
यते वते सारी पानेछी ।
असेची साडान दीशन दीशन ॥
धर्मची पीता यमे अन्द्र ।
ब्रह्मज्ञान करितो ब्रह्मपद पाई ॥
हे महेशो अद्भुद दिव ॥ ४ ॥
असछी करान तिर्थं सारी ।
धर्मची तीर्थ यमे अन्द्र ॥

गङ्गा जमनै सरस्वती हटछी ।
घटछि पनुनै नरायन । ब्रह्मज्ञान करित० ॥ ५ ॥
पनिन अन्दर उछते अमछि बीहित ।
ब्रह्मछि जोती प्रकाशित ।
पूजा करिय हरिय द्वारे ।
भगवती अती प्रियछी ॥ ब्रह्मज्ञान करित० ॥ ६ ॥
गङ्गोत्री असे गङ्गा द्राइ ।
गङ्गासागर सायके ॥
गंगा हरीये दरशन साई ।
हरिहर करित्त ब्रह्म द्राई ॥ ब्रह्म ज्ञान करितो० ।७।
असछी बीहित डगमग धारस ।
ब्रह्म शिव तारस भवसागर ॥
कलयुग अंदरछि सत्ता वथिये ।
महात्मा यतछि कल्यान रुप ॥ ब्रह्मज्ञान करितो० ॥८॥
तमे दो रोजने महात्मा यते ।
तमे दो रोजने क्रैं तेन कां
पनुन आत्मक ध्यान करिय यते ।
परिमात्मा यते मीलुन ॥ ब्रह्मज्ञान करितो० ॥ ९ ॥
ऋषी शोर मुनी शोर आए चोन दर्शन ।
ब्रह्मनाथ छी वड़ तपस्वी ॥
ब्रह्मनाथ स्वामी दर्शन मीलुन ।
सरिन दितुने आशीर्वाद ॥ ब्रह्मज्ञान० ॥ १० ॥
मृत लोक अन्दरची प्रतक्ष मूर्ति ।

श्रुति भगवतिछि पाने सुकति ॥
ब्रह्मनाथ स्वामी तेज स्परूपछी ।
अनुभव सुपने दितुनै । ब्रह्मज्ञान० ॥ ११ ॥
ब्रह्मनाथ छीय जोति स्वरुपछि ।
पानेछि करान यज्ञादी ॥
त्रभवनक स्वामी पाने आए ॥
ब्रह्मानंद स्वामी पूजा करिज़ै ।
पाने छीय आत्मनी रुप ॥ ब्रह्मज्ञान करितो० ॥ १२ ॥
दितुने भगवति तवे आय शक्ति ।
साड़ित्तो आनिय सरस्वती पोश ॥
ब्रह्म अन्दर दर्शन कोरु ब्रह्मनाथछि ।
शिवस पूज़ेनम प्रति दीनम् । ब्रह्मज्ञान० । १३ ।
ब्रह्मनाथ व्याखान वनुहै रुतियै ।
सोभाग्य वतिय इतिय रोज़ ॥
अगनस अन्दरे अगने द्राई ।
ज्वालाए सेति जोति द्राइ । ब्रह्मज्ञान करितो० ॥ १४ ॥
अन्दरौ निवरौ छिय थले थले ।
जगत हरी छिक हरि जगत ओं ॥
पाने छि करता पाने छि हरता ।
पानेछि पुत्रे पाने पिताछि ॥
शक्ति सरुपछी शान्तीय रूप । ब्रह्मज्ञान० ॥ १५ ॥
शिवलोक अन्दरछि तारक मंत्रे ।

ब्रह्मलोक अन्दरक ध्यानसुर ॥
सुनछुइ प्रानन अन्दरुई माता ।
ध्यानक पीता यते छुई ॥ ब्रह्मज्ञान० ।१६ ॥
ब्रह्म सिद्छि हटे सरस्वतियै ।
शान्तम शीवम तेजस्वी ॥
ओंकार छिय प्रान्न सत्ता ।
उष्थ वथे यते ओंकार सुर ॥ ब्रह्मज्ञान० ॥ १७ ॥
सर्व लोकक श्री आये ।
सर्व लोकक वैंते बोज ॥
चांई छुहक अदभुद लीला ।
अस छेन ज्ञान तै कुस ऊछे । ब्रह्मज्ञान० ॥ १८॥
काशी छ शरिरै तमे अन्दर बासछी ।
साची छ सारन सेती हेत ॥
चांइछ साधना चांइ छ बंधना ।
चांइ छ हक आराज़ । ब्रह्मज्ञान० ॥ १९ ॥
सिद्छी करान सर्वत्र कारी ।
सर्व लोकक वैंते बोज ॥
महो धरिछी मौकते केशी ।
वोछक करान प्रार्थना । ब्रह्मज्ञान० ॥ २० ॥
सारी छिये वासना चौंई ।
असगय बुलित्तो ध्यान छोंनुई ॥
सुछेक परिमानन्दे रुपे ।

परम सुखे परिमानन्द । ब्रह्मज्ञान० ॥ २१ ॥
नामे चानिस लजिय पारी ।
दितुने ज्ञान तै ध्यान सारी ॥
दरमची पीता इहि तेजस्वी ।
दितुने सारी पदारथ ॥ ब्रह्मज्ञान० ॥ २२ ॥
द्रोपदीय लज्जा रखने स्वामी ।
तीथे म्योंनी लाज रछ ॥
शंकरानन्द हुन बरसाय ।
सर्वत्र कोरुइ कन्चन मय ॥ ब्रह्मज्ञान० ॥ २३ ॥
प्रतच्त माता आनन्द भवनस ।
मै ई कथ बोज्ञतै माते शोर ॥
सहस्त्र भुज सेत अदभुद दिव ।
म्योहन छक माता शसत्रे धारित । ब्रह्मज्ञान० ॥ २४ ॥
चांई महिमा छिय अपरम्पार ।
वोकरस दीवी पूजा पाने ॥
सेत नारायन हनवन दिव ।
इच्छा सीती कोटी संसार ॥
तस्मातु यदे शरने आइ ।
मम दीनवन्धु कृपा कोई । ब्रह्मज्ञान० ॥ २५ ॥
सुछेक म्योंनी आधार शक्ति ।
वोछक चानी निज दासी ॥
नाम चोन दरम चोन दरम कुल जाई ।

नारद मुनी शोर यते आइ । ब्रह्मज्ञान० ॥ २६ ॥
वो छक दीन दयालन शरने ।
लक्ष्मी यतें प्रकाशछी ॥
सारी सृष्टी रचिय ब्रह्मैं ।
तसुन्दी ध्यान छिन रोज़ान । ब्रह्मज्ञान ॥ २७ ॥
आत्मा शुद्ध करु सीदै सौपनै ।
प्राणं प्राणैं ब्रह्मछी ॥
सारी दिवकी छिय सिरताजछी ।
तसुन्दी ध्यान छिन रोज़ान ॥ ब्रह्मज्ञान०॥ २८ ॥
पानेछी साक्षी रुपै सेती ।
बीहित्तौ साक्षी यमे अन्दर ॥
ध्यान अन्दर ध्यान करित्ते उछि ।
पाने मिलनुइ साक्षी भगवान् ॥ ब्रह्मज्ञान० ॥ २९ ॥
नेत्रछी सूर्य जोती प्रकाशछी ।
पाने छि जोती हेत बीहित ॥
अन्ताकरनछि शब्दै धुनिये ।
शब्दा बलिय बोज़सु । ब्रह्मज्ञान ० ॥ ३० ॥
करिये परिओपकारे भारी ।
यमे खत छिए शरिर धारी ॥
सुफल करनी करतै सारी ।
ब्रह्म मिलनुइ यते पेठ । ब्रह्मज्ञान० ॥ ३१ ॥
यमकि अमनै भय भारी ।

मिलनै तसुन्दे बड़ कठिन छी ॥
चांई स्वांसे स्वांसे अथा गई ।
यम अन्दरछि त्रलोक्य मोल । ब्रह्मज्ञान० ॥ ३२ ॥
सारी छीय दान्न दीवान ।
भुशान छीय अनीमोल ॥
पाप पुन्य सीती यमरुप धारी ।
करनी करनै पुरन सोंपइ । ब्रह्मज्ञान० ॥ ३३ ॥
वोंयछे न जनान कुस रुप धारो ।
परमभक्ति सोंपुनेसु ।
नारायन जीवनो निद्राकारी ।
सुपने द्रष्टीछि सारीयै ॥ ब्रह्मज्ञान० ॥ ३४ ॥
हिरने गरभछि सुपने सारी ।
पानेछि साक्षात नारायन ॥
दितिये अद्भुद हितीथै कोछे ।
पोशे बोलागोसे ब्रह्मदर्शन । ब्रह्मज्ञान० ॥ ३५ ॥
ध्यान सीती रोजनै द्वारे ।
हरी वो यते आए ॥
ब्रह्मशिव आइ यते पाने ।
चानिस करनम बड़ अस्तुत । ब्रह्मज्ञान० ॥ ३६ ॥
चंदन नगर की लव कुश पूजा ।
पाने छीए परम भक्ति ॥
असछि परमेशुकरो सेती ।

हरिए अथछि सारीय कार ॥
पनिन मनन कोर खे ज्ञानसु । ब्रह्मज्ञान० ॥ ३७ ॥
कैलाश पेठ शिव शङ्कर आई ।
पोश थाल बरित्त हेत वथिए ॥
पाने आए शिव शङ्कर यते गए वीहित ।
पाने दितुने अकस्मात् ॥
पाने करुने कञ्चनमय । ब्रह्मज्ञान० ॥ ३८ ॥
कलशस चाने दोदे धारा ।
मस्तक चाने चन्द्र धारस ॥
हटस चाने हलाहल धारस ।
अस्तुति करान सारन ॥ ब्रह्मज्ञान० ॥ ३९ ॥
पाने करिते जलनै बिहार ।
पोशे बोलागोस वथी वथी ॥
दितियै दरशन भोलानाथ छी ।
बोछक चांइ निजदासी ॥ ब्रह्मज्ञान० ॥ ४० ॥
दपने लजिए नो शिवस पाने ।
सुमंग बरिदान यते सारी ॥
पाने छे शिव शङ्कर पाने छे हरिये ।
बोज मोंइ प्रार्थना । ब्रह्मज्ञान० ॥ ४१ ॥
द्वारकानाथ यते कलीकान वथियै ।
हे प्रतिपालै चमा कोर ।
यतेछि सारी धोखे धारी ॥

पनिन स्वमछी जाल वथीरान ।
हे रत्नपाले क्षमा कोर । ब्रह्मज्ञान० ॥ ४२ ॥
यते आए साखी गोपाल निरनै करने ।
वोछक करान शरनन ध्यान ॥
वोछक करान चोनुइ ध्यान।
यते जो माया रुपी सारी ॥
इन्द्र जल वथ यथछी । ब्रह्मज्ञान० ॥ ४३ ॥
यमे संसारे अपज्ञे सारी ॥
असे जनान पूजछी ।
यत छी आवागमनक लेखे ॥
यते छीये कलेशस । ब्रह्मज्ञान करित्तौ ब्रह्म० ॥ ४४ ॥
चांऐं आसस छिए विहित ।
सुई म्योंई सुछेक हेत ॥
अलपछि सुखपते बहु कलेशस ।
संसार ईमे नानेछी । ब्रह्मज्ञान करित्तौ ब्रह्म० ॥ ४५ ॥
असेछि यतकित पाने रोवि ॥
तसनदुई यते कमिए न पाय।
वोछक पुरब जन्मेद ब्रह्मे ॥
वोगसे ब्रह्मै पद
त्रलोक्यनाथो हरि छुई ॥
नमो शान्ता पते तेजस्वी। ब्रह्म ज्ञान करित्तौ ब्रह्म पद० ॥४६ ॥
परम ब्रह्म सित परब्रह्मछि ॥
सतछी गौरी सतीये संग ।
देवी आई माया लाई ॥
दिवी छीये माया ये नाम । ब्रह्म ज्ञान करित्तौ ब्रह्म० ॥ ४७ ॥

सूचना।

हमारे यहां से लेडी डाक्टर श्रीमती राजेश्वरी शर्मा M. D. (C. H. M. C.) धर्म पत्नि पं० चन्द्रमोहनजी शर्मा डिप्टी कलेक्टर यू० पू० की लिखी हुई पुस्तकें प्रकाशित हो गई हैं, जो कि प्रत्येक गृहस्थी के लिये बहुत उपयोगी हैं। श्रीमतीजी कई वर्षों से ग़रीबों को मुफ़्त दवाएं देने और सुर्मे बांटने का कार्य भी कर रहीं हैं।

(१) मनोरंजक पहेलियाँ—बुद्धिवर्द्धक, दिल को खुश करने वाली अर्थ सहित, मूल्य –)

(२) पाक प्रकाश—इसमें काश्मीरी, बङ्गाली आदि हर देश की अनेक प्रकार की भोजन सामिग्री, शर्बत, मुरब्बे, मिठाई, पकवान, अचारादि बनाने की सरल विधि और उनके गुणों का वर्णन है, मूल्य १) पोस्टेज अलग। १६ किताब साथ लेने से १) कम किया जायगा।

(३) बुनाई के नमूने का मास्टर—इसमें छोटे और बड़े सब तरह के पुलोवर, स्वेटर, टोपी, जाकट, जर्सी, जांगिये, फ्राक, बच्चों के कोट आदि पोशाकें तथा अन्य-अन्य नये-नये नमूनों के बनाने की विधि सरल रीति से बताई गई है। इसमें २२ तसवीरें ५५ पोशाकें और ६४ नमूने बुनाई के दिये हैं। मूल्य १।) पोस्टेज अलग। १दर्जन किताबें लेने से १)कम कर दिया जायगा।

(४) घरका वैद्य—घर-गृहस्थ के सभी रोगों के पह-

चानने की विधि, इलाज और सेवा-सुश्रूषा करने का ढङ्ग, शरीर के भीतरी हिस्सों का वर्णन, तन्दुरुस्त रहने के नियम, शरीर को पुष्ट और बलवान बनाने वाले व्यायाम, चोट, घाव का इलाज, पट्टी बांधने की रीति सब लिखी गई है। नुसखे सफल चिकित्सक और साधु-महात्माओं के बतलाये हुए हैं, जो कि सैकड़ों वार के अनुभव किये हैं। लगभग ६०० सफ़ा मूल्य ४) रु०, राज संस्करण वढ़िया मोटे काग़ज़ पर ५) डाक ख़र्च अलग। इसमें शरीर सम्बन्धी २६ ब्लोक भी दिये गए हैं।

सभी पुस्तकें एक साथ लेने से दामों में ।।।) कम किये जायगें स्कूल की लड़कियों के लिये इससे भी विशेष रियाअत होगी।

नं०२पृ०४ के आगे का मैटर देखिए।

नं (११) के नोट में—स्वर्गवासी रिश्तेदारों के नाम के आगे पंडितन कहना चाहिये। जीवित रिश्तेदारों और वर (दूल्हे) के नाम आगे जीवने कहना चाहिये। यह हमेशा ध्यान में रक्खे।

शब्द	अर्थ
अथछी	हाथ
अथ दारित	हाथ में
अम्बारी	हौदा
अशने	आशीर्वाद
इत्तियै	यहां
इतिये	यहां के हुये हैं
उछित्तौ	देखकर
कथ	कहा
कलानतो	कलांए या ध्वज
कमि	काम
करनम	की
क़ल्गी	वह ज़ेवर जो कि पगड़ी पर खड़ा रहे (शृङ्गारका सामान)
करानछि	कर रही
कारीयै	कारज या काम
किमी	कैसे
कुन्दन पेठे	कुन्दन के ऊपर
कूरन, कूरी, कूरीयै	लड़की
कोछे	गोद में
कोरु	कर रहे हैं
कौमारीयै	लड़की
कुङ्गपोष	काश्मीरी फूलका नाम
ख़लतस	ख़िलत
खोरन तल	पैरों तले
गनेसश	गणेशजी
गरभस	गर्भ
गसहा न करहा	करना नहीं मिला
गटे मंजे गाश आए सिरिय द्राव भारी	बड़े सूरज के निकलने से मेरे आखों में रोशनी आगई
गुल ज़ारी	सरसब्ज

शब्द	अर्थ
गोर	गुरु
घुड़	घोड़ा
चरनछि	चरणों में
चरनुक	चरनों का
चानिस चोन चाए चाने	तेरा, तुझे
छि	से या साथ
ज्वालाय	ज्वाला देवी का नाम
जातुक	जन्म पत्रा
जगे	जोकि पगड़ी पर बांधा जाय (शृङ्गार का सामान है)
डेक, डिकस	क़िस्मत
तपकोर	तप किया
तरहदारी	वज़ेदारी
तवे	तब
तुलितौ	उठाना
तोहे	तू
थले	लाड़चाव से
थोउ	रक्खा
थोवुने	रखना
दान हेने	दान लेने
द्वारे पेठ	दरवाजे पर
दुई कुल	दोनों कुल
दितुने, दितुनम	दिया

शब्द	अर्थ
दिलगै शाद शाद	जी खुश होगया
दै भत्त. दै बत्त	दही भात
धर्म छि	धर्म से
नामस	नाम
नापायदारी	हमेशा न रहने वाला
नारियै	स्त्रियां
नुशछि	बहू
नैरेने	मुबारिक निकले
नौगृह	जन्मपत्रे के नौगृहे
परमशोर	परमेश्वर
पम्पोश	काश्मीरी फूल का नाम
प्रज्जुलान	चमकना
पनुनई	अपना
पांवुर	बधू के ओढ़ने का चादर
पति सुपन्नुई	पति के सङ्ग
पति सेत	पति के साथ में
पाणीग्रहण	हाथ पकड़ना
पेठे	ऊपर
पोरनम	पढ़ा
पोशेपूज	फूल चढ़ा कर वर बधू को आशीर्वाद देना
फल दितुनै	फल दिया

शब्द	अर्थ
बरथा, बरथा	वर
बरने, बरने	ब्याहने
बवजू	बाप का
बेइंया	बहिन
बसन्तुए	बसन्त ऋतु (माघ + फाल्गुन)
बीठुई ब्वीठुइ	बैठे
बांदौ	बन्धू, बांधव, मित्रगण
भर्ता	स्वामी या पति
मणियां	मणी यानि जवाहरात
महमहकारी	महकना
मंडल	रङ्ग की चित्रकारी जो माता माल का गुरू बनाता है
मंगनुई	मांगना
माजु या माजे	मां या माजी यानि बड़ी बूढ़ी
मित्रेकारी	मङ्गलकारी
मुकुटछि	मुकुट है
मुचतल	मुह के ऊपर
मामू सेंदी	मामू ने
मेलये	डाला
यसे	यह
यारवलगस	दरिया किनारे जाना
युत्तांग	दोनों
राज कर	राज करो
रांय	रानी
राधाछि	राधा से
रछपालिए	मदद करना, रक्षा करना
राजई	राजा
राज्ञाय	राज्ञा देवी का नाम
रटि	पकड़ना
रुतीफल	ऋतु के फल
रुपै सन्दी थालस	चांदी के थाल में
रोज़ेने	खुश रोज़ा हो
लशने	सलामत रहो
लालछुम	लड़का
लांजि २ या लंजे २	शाख २ या पत्ते २ में
लोदुये	परोसा हुवा
बरख़स	साथ
वखनकूं	बयान करना
बर (वर)	दूल्हा
वधू (बधू)	दुल्हन
वथरानछि	बिखरा या डाल रहे हैं

शब्द	अर्थ
वर वथी	चले गये
वारे	खुशी को सूचित करे
विगस	वेगू
वेदुक, वेदकु	वेद के मन्त्र
वोनुहे	कहना
वोहे	वह
वोए सुई	वह हो
विद्याछिहेवान	विद्या ली
वेदछि	वेद के मन्त्र
शारकाय	शारकादेवी
श्रुति	वेद की श्रुति को पढ़ना
सन्द्रमाद्राय	चन्द्रमा निकला
सप्तप्रदक्षण	सात फेरे
सत्यभामा	कृष्णजी की धर्म पत्नी का नाम
सुछ्क	तू कर
सर्वछि	सब
सत्तांए	सत्यकी
सम	समान या जैसा
सन्द्रयम	चन्द्रमा
स्वर्ग वरथी	स्वर्ग के रहने वाले
स्वाहा कारी	अग्निमें आहुति देना
सारछु	सार वस्तु हमेशा रहने वाली

शब्द	अर्थ
सेती	से या साथ
सेतछि	साथ
सीठा	अच्छा
सोन	सोना
हश	सास
हाउस	अरमान
हरि	कण्ठ या गला
हिहुर, होर	ससुर
साहाकारी	सहायता करें
सालिग्रामई	सालिग्रामकी
सारियै	सब
हौंजें	शुभ नाम का सूचक है
हुम पर	हुम चिड़िया का पर राजाओं को लगाया जाता है
हुमछि	होम
हूंदी	लड़की
हेत	लेकर या लिये
हेने	लेने
त्रपुराय	त्रिपुरा देवी का नाम
त्रकोटी	तीन करोड़